यक्ष प्रश्न

डा0 लक्ष्मीनारायण लाल

शब्द नहीं संवाद

आज 'यक्ष प्रश्न' जब अपने वादी रूप से अब संवादी नाट्य–रूप में हमारे सामने प्रस्तुत और प्रकाशित हो रहा है तो इस अवसर पर नाट्य–कर्मियों, रंगप्रेमियों और अपने विशाल दर्शक–पाठक समाज से कुछ कह देना, अपना पुनीत कर्तव्य समझता हूं ।

तब से अब तक कई मंजिलों तक इसकी यात्राएं हुई हैं । आपात्काल में 'यक्ष प्रश्न' तरह–तरह से रंगभूमि और भूमिगत दोनों प्रकारों से खेला जाता रहा है । इसके प्रत्येक प्रदर्शन ने, जिसका मैं सहभागी रहा हूं, मुझे लगातार चुनौती दी, कि मैं इसे इसकी समग्रता में फिर से देखूं । समग्रता में देखने का एक ही अर्थ है – अपने वर्तमान समय की समसामयिकता में देखना ।

और हिन्दू मिथक
ये पुराण कथाएं
ये प्रतीक चरित्र

सत्य देखने और कहने की हिन्दू–दृष्टि–– इसमें कहीं भी कुछ भूत और अतीत नहीं है । सत्य है तो वह केवल वर्तमान है और यक्ष !

यक्ष तो केवल काल है । और काल हर क्षण प्रश्नकर्ता है । जो कुछ हमारे चारों तरफ हो रहा है, जो कुछ अभिव्यक्त है, अभिव्यक्त हो रहा है, हमारे सामने जो क्षण खड़ा है, उपस्थित है, वह सब कुछ वादी–संवादी है ।

एक यक्ष दूसरा पांडव
एक प्रश्नकर्ता दूसरा उत्तरदायी

एक जो अकर्ता है, केवल गवाह है, दूसरा जो कर्ता है । पर क्या वह कर्ता है ? पर वह केवल समय प्रवाह में बह रहा है ? वह कर्ता है या केवल पदार्थ है, क्रिया है या केवल प्रतिक्रिया है ?

यह यक्ष प्रश्न स्वयं को और मुझे संगीत के वादी–संवादी स्वरों में बांधे रहा । यह संगीतमय कसाव उत्तरोत्तर बढ़ता रहा । इसे जब एक नये सिरे से अपने वर्तमान समय से युक्त करके दिल्ली रेडियो से प्रस्तुत किया फिर जब इसकी जीवनगत समग्रता में जाकर, दिल्ली दूरदर्शन के लिए फिल्म–निर्माण किया, तब मुझे हृदय से अनुभूत हुआ कि 'यक्ष प्रश्न' है, यक्ष प्रश्न 'था' नहीं । चारों दिशाओं से, हर स्थान, हर समय यक्ष की असंख्य आंखें हमें निहार रही हैं । यक्ष हमसे संवाद करना चाहता है पर हम पहले अपनी प्यास बुझाने के लिए आकुल हैं । पहले और बाद में कुछ नहीं है, जो कुछ है वह अभी है, यहीं, इसी क्ष्ण । उत्तर केवल युधिष्ठिर ने दिए, उस दान से सारे पांडव जीवित हो गए । जिस दिन सारे पांडव उत्तर देंगे, क्या पूरा समाज–पुरूष नहीं जीवित हो उठेगा ?

निरूत्तर काल–जल पीकर पुरूष मूर्छित पड़ा है, उत्तर देना होगा !

'यक्ष प्रश्न' को जब लघुनाटक–एकांकी के रूप में लिखा था, तब मुझे इस बात की जरा भी आशा या आंशका नहीं थी कि मैं इससे इस तरह क्या, किसी भी तरह छुटट्ी नहीं पाऊंगा । यह मेरे लेखन की एक खास पहचान है कि मैं कुछ लिखकर उससे छुटट्ी नहीं पा जाता । बल्कि लिखकर उसका अभिन्न अंग हो जाता हूं । उतना ही अपनी रचना में रह जाता हूं । उसमें मैं उतना छूट जाता हूं, ऐसा नहीं कह पाऊंगा । मैं उन सामान्य व्यक्तियों में से हूं जो हर चीज को जीवित प्राणमय मानकर चलता है । चलता है माने जीता है, उन सब चीजों के साथ जिसे मैं स्पर्श करता हूं, जिनका मैं उपयोग करता हूं, जिनके संपर्क में आता हूं । कलम से जिस कागज पर मैं ये बातें लिख रहा हूं – सब मेरे लिए जीवनमय प्राणमय हैं । यह मैं न कोई दर्शन की बात कर रहा हूं, न अध्यात्म की । बिलकुल अपने व्यवहार की बात कर रहा हूं । जैसे इस कलम को, कागज को, स्याही को, एक जीवित सत्ता न मान, इनपर उतना ध्यान न दूं तो ये चीजें मेरे साथ वह जीवंत सहयोग देना बंद कर देंगी, जिससे कि 'रचना' होती है ।

यह प्रतीति, यह अनुभव मुझे 'यक्ष प्रश्न' से मिला, जब मैं यह बात कह रहा हूं तो यह साक्ष्य देना चाहता हूं कि यह बात मैं अपनी मातृभाषा में लिख ले पा रहा हूं –बेझिझक, निर्भय, निःसंकोच, कि यह अनुभव मुझ मिला ।

यह अनुभव कि हर चीज में प्राण है । हर चीज एक प्रश्न है । हर वस्तु को उत्तर देना होगा । उत्तर देकर भी छुटट्ी मिल जाए, यह भी संभव नहीं । सतत, हर क्षण, हर–वस्तु, हर कर्म, हर चीज, हर व्यवहार, हर भाव, हर स्थिति के साथ, उत्तर देना होगा । क्योंकि हर अस्तित्व एक प्रश्न है । जीवित प्रश्न और उत्तर भी उसी में है ।

हर प्रश्न अपने साथ उत्तर लेकर आता है । और हर उत्तर में प्रश्न का निरंतर सतत जन्म है । यह अनुभव ही शायद चैतन्य है । यह प्रतीति ही 'मैं' है, जो 'मैं' से विस्फोटित होकर व्यक्ति, समाज, देश, विश्व, तक अपना प्रसार पा जाता है । पर प्रसार का अर्थ एकात्म नहीं, प्रसार का अर्थ है साक्षात्कार – एक युद्ध, एक सतत लड़ाई, एक सतत विकास, एक सतत फल – जो पहले कभी नहीं था । जो कभी किसी अतीत में नहीं है । जो है – सिर्फ वर्तमान में । पुराण कथा, पुरा चरित्र, पहले की घटनाएं, इतिवृत, बातें, वर्तमान को पहचानने, शब्द देने, चित्त और अवधारणा में, लेने–पाने में हमारे सहायक हैं – हमारे आधार हैं – जैसे हमारे मां–बाप, गुरू ।

'मैं, अगर केवल 'मैं' ही रह जाए तो निष्फल होगा । 'मैं' अगर 'व्यक्ति' होकर रह जाए, आगे विकास न कर सके तो भी फल नहीं प्रकट कर सकेगा । मैं अगर व्यक्ति हुए बिना ही समाज, देश, राजनीति, धर्म और अध्यात्म हो जाए तो भी बांझ है ।

तीनों जीवित सत्ताएं हैं । तीनों मात्र अवस्थाएं नहीं हैं। तीनों हैं, तीनों सापेक्ष्य हैं । तीनों अभिन्न हैं । तीनों एक साथ हैं । एक को पूरी तरह से जिए, पूरी तरह से प्रकट किए बिना, आगे नहीं बढ़ा जा सकता । जब एक पूरी तरह से भर जाएगा तभी तो दूसरे की दरकार होगी । दूसरा भर जाएगा तो तीसरे की ओर जाना होगा । 'मैं' नहीं भरेगा तो व्यक्ति (व्यक्त) कैसे होगा ? व्यक्ति नहीं होगा तो एक और एक दो कहां से होंगे, तब तो एक और एक अर्थात् 'एक ही' होगा ? समाज, देश और नगर कहां होगा ?

दरअसल मेरे लिए उतना ही है जितने की मैं रचना करता हूं । मेरे लिए केवल वही है, उतना ही, जितने को मैं अपने व्यक्ति से व्यक्त करता हूं । उतना ही है मेरा जितने को मैं उत्तर दे पाता हूं । उत्तर देना माने स्वीकार करना – जीना, अपने पात्र को भर देना – पा जाना । जो पाया है, वही तो देगा । जो भरा और भरता चला जा रहा है वही तो बड़े–से–बड़े पात्र, बड़ी–से–बड़ी अवस्थाओं, स्थितियों की ओर बढ़ेगा ।

आज बुनियादी प्रश्न यही एक है कि मेरा 'मैं' क्या है ? मेरे मैं का 'स्व' क्या है ? मेरी पहचान क्या है ? मेरी अस्मिता क्या है ? यह प्रश्न आध्यात्मिक नहीं है । कतई नहीं । जीवन के साथ अध्यात्म, दर्शन, धर्म का एक अजीव हौव्वा खड़ा कर दिया गया है हमारे चारों तरफ ताकि डर के मारे हम अपनी पहचान भी न कर पाएं । दूसरी बात – हें इतना व्यस्त कर दिया गया है – अर्थहीन, अप्रासंगिक चीजों में उलझा दिया गया है कि हम जरा रूककर अपने आप को देख तो लें कि यह 'प्यास' क्या है – क्यों है – प्यास मेरी हे पर किसी और की दी हुई है ? प्यासा अर्जुनदेव है, दौड़ा रहा है सहदेव शर्मा को – प्यास भीम वर्मा की है – दौड़ा रहा है उन सबको, जो उसके संपर्क में आते हैं, क्यों ?

अगर हर 'मैं' अपने आप से प्रश्न करना शुरू करे तो उससे उसकी अपनी मुलाकात हो जाएगी । उसका 'मैं' –– उसका अपना पात्र, उसका अपना वर्तन दिख जाएगा । तब यह दिख जाएगा कि हमें तो अपनी प्यास का पता ही नहीं है । पता है तो उसकी चिंता ही नहीं है । 'मैं' तो दूसरे के 'मैं' की प्यास ढो रहा है । दूसरी ही प्यास बुझा रहा है । इसीलिए यह जितना ही पी रहा है, उतनी ही उसकी पिपासा बढ़ रही है । युवा छात्र की प्यास परिवर्तन है । उसकी स्वाभाविक प्यास ज्ञान–प्राप्ति की है । पर वह किसकी प्यास बुझा रहा है ?

राजनेता, उद्योगपति, अफसर आदि की प्यास बुझ रही है ? कोई उत्तर देने की स्थिति में है ? हर एक दूसरे पर उत्तरदायित्व फेंक रहा है । और स्वयं उससे मुक्त बने रहने के प्रयत्न में, आडम्बर में लगा है। हम इस चक्कर में लगे हैं कि कहीं किसी प्रश्न से, कहीं अपने आपसे साक्षात्कार न हो जाए । इसीलिए, हम देखते हैं कि हमारे चारों ओर इतने खोखले आकर्षण, इतने आडम्बर, इतने सिद्धान्त–विचार, इतने बहाने, इतने स्पष्टीकरण, इतने भागने–छिपने की आधुनिक गुफाएं निर्मित होती चली जा रही हैं कि लोग खुले में बहुत मुश्किल से दिखते हैं । आगे शायद यह दिखना भी असंभव हो जाएगा । लोग दिखेंगे नहीं, उनके फोटो दिखेंगे, अखबारों में, दूरदर्शन में । धीरे–धीरे यह दिखना भी बंद हो जाएगा । क्योंकि हर दिखाई देने वाली चीज अपने पीछे न जाने कितने प्रश्न छिपाए रखती है ।

प्रश्न से सामना करने का अर्थ है स्वयं, अपने आपमें वही प्रश्न हो जाना ! उत्तर देने का मतलब है, वही उत्तर स्वयं हो जाना । उत्तर आचरण है, क्योंकि प्रश्न आचरण से ही जन्म ले रहा है ।

मेरी मां कहा करती थी ('लंका–कांड'–'कजरी बन'––दोनों नाटकों में) कि प्रश्न मत करना नहीं तो अकेले हो जाओगे । प्रश्न करते–करते मुझे अनुभव हुआ इसकी व्यंजना यह है कि अगर प्रश्न नहीं करोगे तो अकेले हो जाओगे । और अगर उत्तर नहीं दूंगा तो ?

तब क्या होगा ?

अकेलों में भी अकेला हो जाओगे । अकेलों में भी अकेला !

हां, शव !

यही यक्ष प्रश्न है – मैं कौन हूं ? इसका उत्तर मेरे सिवा और कौन देगा ! यह मेरा व्यक्त (व्यक्ति) क्या है ? यह कहां व्यक्त हो रहा है ? किस देश और काल में ? यह देश क्या है ? यह भारतवर्ष मेरा देश है ? भारतवर्ष माने क्या ? यह मेरा है या किसी और का ? इससे मेरा क्या और कितना सम्बन्ध है !

मैं और मेरे व्यक्ति के बीच, मेरे व्यक्ति और मेरे समाज और देश के बीच असत्य आ खड़ा हुआ है। यह असत्य निद्रा की अवस्था निद्रा की अवस्था में आ घुसा है । यह वह अवस्था है जब जैविक स्वार्थ के अलावा चित्त की सब खिड़कियां बंद हो जाती हैं । जब मेरे मैं और समाज, व्यक्ति और देश के सत्य के साथ कोई योग नहीं रहता !

अपने प्रति अपना ही सत्य परिचय देने में हम लोग असमर्थ हो गए हैं । पुरूष पक्ष हमसे प्रश्न कर रहा है – कौन ? कौन हो तुम ? यह कैसी फास है ?

प्रश्न करते–करते तब से आज यहां आ पहुंचा हूं – अपने आमने–सामने । सबके पास । सबके बीच में – जहां मैं अपने आपको ही सब स्थितियों के लिए उत्तरदायी पाता हूं ।

आज चारों ओर हर दिशा और क्षेत्र में सत्य का रहस्य, मूक बना खड़ा है । इस रहस्य का उत्तर हमें अपनी ही शक्ति से देना है ।

नई दिल्ली — लक्ष्मीनारायण लाल

4 जून, 1980

चरित्र

वृंद गायक
सहदेव शर्मा
नुकल सेन
भीम वर्मा
अर्जुन देव
सत्य प्रिय
शशी
पिताजी
विजय
बलराम
चपरासी
हरीराम
श्रीमती
मिस इला
कुमार
यक्ष
और लोग

जैसे ही चला पीने पानी
आई यक्ष की आवाज
पहले मेरे प्रश्न का उत्तर दो
तभी पी सकते हो पानी ।

वृंद : आज हम यक्ष कथा हैं दिखाते ।
बच्चा : आज हम यक्ष कथा हैं दिखाते ।
पिताजी, आज यह कथा क्यों ?
हमें तो 'कामिक्स' अच्छे लगते हैं
परियों की, ड्रैंगन की, भूत–प्रेत
मारपीट की कहानी सुनाइए
मुखिया : नहीं, आज मैं तुम्हें ... ।
बच्चा : अच्छा, फिर क्या हुआ पिताजी ?
मुखिया : सहदेव ने यक्ष से कहा –
वृंद : पानी पी लूं फिर दूंगा उत्तर ।
बच्चा : पहले पानी पी लूं फिर दूंगा उत्तर ।
फिर क्या हुआ ?
मुखिया : बिना उत्तर दिए सहदेव ने जल पिया
और जल पीते ही मर गया ।
वृंद : जो अपने समय का
उत्तर नहीं देता
समय उसके लिए काल हो जाता है
समय काल हो जाता है
समय काल हो जाता है ।
वृंद : उत्तर सूर्य जल के मौम में डूबा
प्रश्न की ऊष्मा घिरा हुआ काल है
एक और प्यास
दूसरी ओर अथाह जल
प्यास ऐसी जल से बुझती कहां
प्यास ऐसी
प्यास ऐसी
प्यास ऐसी ।

दूसरा दृश्य

(सहदेव शर्मा के पिता बच्चे को कथा सुना रहे हैं । सहदेव दरवाजे पर)

बच्चा : फिर क्या हुआ पिताजी ?

पिता : सहदेव के बाद नकुल आया । वह भी यक्ष के प्रश्न का उत्तर दिए बिना जल पीने लगा ।

सहदेव : बकवास । यही उल्टी–सीधी बेमतलब की कहानियां सुनाकर मेरा जीवन आपने बरबाद करना चाहा । अब इस नादान की जिन्दगी तबाह करना चाहते हैं ।

बच्चा : भइया, पिताजी से ऐसी बातें क्यों करते हो ?

सहदेव : बेवकूफ अब तक जमा बैठा है । जाकर सो जा, नहीं तो ये बेसिर–पैर की कहानियां सुनाकर नींद हराम कर देंगे ।

पिता : रात के बारह बज रहे हैं । यह घर आने का समय है ?

सहदेव : पानी कहां है ? मारे प्यास के गला सूख रहा है । (ढूंढ़तता है) पानी कहां है ?

पिता : कभी पानी भरा भी है ? प्यासे को पानी की चिन्ता स्वयं करनी होती है ।

सहदेव : चुपचाप जाकर सो जाइए ।

पिता : खा–पीकर आए हो ?

सहदेव : मारे प्यास के गला सूख रहा है ।

(बैग में से बोतल निकाल कर दांत से खोलकर मुंह पर लगा लेता है ।)

सहदेव : जाकर सो जाइए, वरना बीमार पड़ जाएंगे ।
तीमारदारी करने का फजूल वक्त नहीं है मेरे पास ।

(सो जाता है ।)

पिता : सुनो ।

सहदेव : सोने दीजिए । सुनो–सुनो ... बहुत सुन लिया ।

पिता : इस घर को होटल समझ रखा है । घर आते ही सो जाना । सुबह चुपचाप खिसक लेना, यूनिवर्सिटी में इसीलिए भेजा था ?

सहदेव : आप समझते क्यों नहीं, पढ़ाई–लिखाई में कुछ नहीं रखा । आप इतना पढ़कर आखिर क्लर्क ही तो हुए । देख लेना, मैं बिना पढ़े–लिखे जो बनूंगा, हजारों–लाखों जय–जयकार करेंगे मेरी ।

पिता : वहीं हड़ताल, घेराव, आन्दोलन ।

सहदेव : इसके अलावा 'पोलिटिकल केरियर' बनाने का आज और कोई तरीका नहीं ।

पिता : अब बस केवल नंगी राजनीति ही रह गई है ?

सहदेव : उसके आगे और सब बेकार है ।

पिता : यह झूठ है ।

सहदेव : जाइए यहां से, मुझे सोने दीजिए ।

पिता : सब कुछ जीवन है । समाज है । राजनीति एक अंश मात्र है । संपूर्ण केवल समाज है । जैसे व्यक्ति अंश है समाज का, वैसे ही अंश है राजनीति, समाज का । अंश को संपूर्ण मान लेना और दूसरों से मनवाना, यही है वह अंधी राजनीति जिसमें मेरा बेटा गुमराह हो रहा है। यह बेपढ़ा रह जाए ।
इसके सारे संस्कार भ्रष्ट जो जाएं, दुश्चरित्र, कायर हो जाए ताकि गुलामी करे ऊपर वालों की । और अपने साथियों को बहकाए, गुलाम बनाए । राजनीति गुलामों का जीवन है क्या ? बोल, क्या है तेरे पोलिटिकल केरियर की राजनीति ?

(सहदेव सो चुका है ।)

बच्चा : भइया सो गए । उत्तर नहीं दिया ?

पिता : हां, देखो । देखो ... ।

(सहदेव नींद में बड़बड़ा रहा है 'इन्कलाब', 'छोड़ दो । सहदेव चीखकर उठ बैठता है । तीनों चुप देखते हैं । पृष्ठभूमि में शोर 'इन्कलाब जिंदाबाद' । प्रकाश बुझता है ।)

तीसरा दृश्य

(घेराव–दृश्य । सहदेव आता है । छात्र प्रसन्न है ।)

एक छात्र : गुरू, युनिवर्सिटी बंद ।

सहदेव : शाबाश ।

दूसरा : अनिश्चित समय के लिए यूनिवर्सिटी बंद । यह देखो नोटिस, नोटिस बोर्ड से चंपी कर लाया ।

(देखता है ।)

तीसरा : टीचर – वाइस चांसलर की चंपी, अभी तक हमने कंपी।

चौथा : अब तो विजय–पर्व मन जाए ।

पांचवां : अब लौटकर कौन अपने घर जाए ।

(हंसी)

छात्रा : बधाई । कांग्रेचुलेशन । हाय ।

(एक युवक दौड़ा आता है ।)

युवक : सहदेव ।

(एक किनारे पर जाकर दोनों में मंत्रणा)

युवक : फैक्टरी में उस अफसर का घेराव कुछ हल्का पड़ रहा है ।

सहदेव : अफसर नहीं, जनरल मैंनेजर ! बेवकूफ कहीं का ।

युवक : गुरू माफ करो ।

सहदेव : यह बता, हमारे पास माल मसाला है न ? बात यह है कि अगर कहीं घेराव फेल होता है तो दूसरे उपाय होने ही चाहिएं ।

युवक : यस सर । काफी हथगोले हैं अपने पास । तीन तो बम्ब हैं सब सवा किलो के ।

सहदेव : शी sss ।

युवक : नेता जी ने कहा है कि जनरल मैंनेजर का घेराव और मजबूत करना होगा । सहदेव को बोलो कि यूनिवर्सिटी से छात्रों को लेकर वहां झट पहुंचे ।

सहदेव : कितना दिया है ?

युवक : पांच । यह एडवांस है ।

(देता है ।)

सहदेव : तुम वहां पहुंचो । हम पहुंच रहे हैं ।

(युवक भागकर जाता है ।)

सहदेव : बधाई । ये लो अपनी कमाई ।

(धन का लिफाफा लेने सबके हाथ उठते हैं । छीना झपटी)

सहदेव : आनंद मंगल करो । मैं अभी आया ।

पहला छात्र : ऐ गुरू, सुटट्ा ।

(चिलम पीता है । बढ़ता है । वाइस चांसलर सामने दिखते हैं ।)

वा0 चांसलर : रूको, मैं तुमसे एक बात पूछना चाहता हूं ।

सहदेव : फिर कभी, अभी वक्त नहीं है ।

वा0 चांसलर : यह वक्त फिर नहीं आएगा । इस तरह यूनिवर्सिटी बंद कराकर क्या हासिल करना चाहते हो ?

सहदेव : इस विषय पर फिर कभी बात करूंगा ।

वा0 चांसलर : यह समय फिर वापस नहीं आएगा । मेरा जो सवाल है वह अभी इसी वक्त का और इसी जगह का है । क्यों इस तरह बंद कराई यूनिवर्सिटी ? ठीक है, तुम्हें पढ़ना नहीं है, पर हजारों लड़के–लड़कियां जो यहां पढ़ने आए हैं, उनका क्या होगा ?

सहदेव : देखिए इस समय जल्दी में हूं ।

वा0 चांसलर : तुम जैसे दूसरों के शिकार बन रहे हो, चाहते हो इतनी बड़ी यूनिवर्सिटी के छात्र तुम्हारे शिकार हों । पता है कहां आग लगा रहे हो ?

सहदेव : क्या करूं सर, पोलिटिकल केरियर के लिए यह बहुत जरूरी है । समझिए यह मेरी पहली सफलता है ।

वा0 चांसलर : मेरी असफलता तुम्हारी सफलता है ?

(छात्र हंसते हैं ।)

वा0 चांसलर : अपने स्वार्थ के लिए इतने सारे छात्रों की जिन्दगी और उनके भविष्य के साथ खेल रहे हो । क्यों, जवाब दो, क्यों ?

सब कुछ उसी हिंसा, दबाव, आंदोलन के सहारे कर डालना चाहते हो ? मेरा और प्रोफेसरों का घेराव करके क्या तुम लोगों ने अपना नाश नही किया ? समझते हो तुम्हारी विजय हुई ? याद रखो कहीं भी मूल्य–मर्यादा की हार होती है, तो वह हमारी हार है, सबकी हार है । हम सबकी ।

पहला छात्र : बंद करो उपदेश ।

दूसरा छात्र : बड़े आए ।

(हंसी)

वा0 चांसलर : गरीबी, जहालत, अन्याय के खिलाफ आंदोलन क्यों नहीं करते ?

सहदेव : मौसम नहीं है ।

वा0 चांसलर : वह मौसम कब आएगा ?

सहदेव : यह जवाब तो आपको देना था । तब आप प्रोफेसर थे । वर्ष में सिर्फ दस दिन क्लास लेते थे । नब्बे दिन मुख्यमंत्री के पीछे–पीछे पूंछ हिलाते थे । तब यूनिवर्सिटी का मौसम कितना उदास होता था । उस उदासी को तोड़ने के लिए हमने सारे उपाय किए । हमें एकाएक, हां, अचानक मौसम को रंगीन बनाने का रहस्य हाथ लग गया । जिसके पीछे हमारे बुजुर्ग घूमते हैं, हम सीधे वहीं क्यों न पहुंच जाएं । बस, मौसम बदल गया।

(सबकी हंसी)

प0 छात्र : देखिए आसमान ।

प0 छात्रा : देखिए चाल–ढाल ।

दू0 छात्र : वाह कमाल ।

प0 छात्र : वह जो फिजिक्स का प्रोफेसर है न, वह कहता था –– यह युनिवर्सिटी कभी नहीं बंद हो सकती । यह पृथ्वी सूरज के चारों ओर घूमती है, मेरा ख्याल है उसका दिमाग हवा में घूमता है । फुर्र – फुर्र – फुर्रर –– ।

(सब : हैप्पी फुर्र)

सहदेव : सर कितना अच्छा मौसम है ।

वा0 चांसलर : लू–अंधड़ भरी आंधी ।

सहदेव : कहां से आई है ?

वा0 चांसलर : हम सब मिलकर इसका जवाब नहीं दे सकते ?

सहदेव : हममें आप में जो दूरियां आई हैं, उसीको भरने यह आंधी आई है।

वा0 चांसलर : रूको, मुझे समझने दो ।

दू0 छात्र : इतनी फुर्सत है ?

प0 छात्रा : हां, अब तो फुर्सत ही फुर्सत है ।

प0 छात्रा : तनखाह तो कहीं जाती नहीं ।

दू0 छात्र : आज इतना धीरज ?

ती0 छात्र : हमारी बातों में रस आ रहा है ।

प0 छात्र : सर आज मूड में हैं ।

(सहदेव जो अब तक किसी लड़की से बातें करने में लग था, बोलता है)

सहदेव : अच्छा सर, फिर भेंट होगी ।

वा0 चांसलर : फिर भेंट नहीं होगी ।

सहदेव : इस तरह भेंट नहीं होगी, यह तो ठीक है । पर भेंट नहीं होगी, यह ठीक नहीं है । मैं मंत्री हो सकता हूं – शिक्षा मंत्री ... मेरे बंगले पर आपसे भेंट हो सकती है । मैं दीक्षांत भाषण देने आ सकता हूं । एअरपोर्ट पर आप मेरे स्वागत में खड़े होंगे । कहिए हां ।

वा0 चांसलर : नहीं ।

सहदेव : काश आप 'नहीं' कर सकते । काश आप इसके पहले इसके विरोध में त्यागपत्र दे देते, फिर यह मौसम न आता । आप ऐसे हुए तभी हमें ऐसा होना पड़ा । हम ऐसे हैं, तभी आपको ऐसा होना पड़ा, यह केवल मन बहलाने का तर्क है ... । आप में विरोध नहीं है, तभी हममें आंदोलन है । यह तर्क नहीं, गाली है ।

वा0 चासंलर : जो कह रहे हो, इसका अर्थ भी जानते हो ?

सहदेव : हम इतने गंभीर नहीं, वरना पागलखाने में होते ।

वा0 चांसलर : इतनी बेसिर पैर ी, बहकी–बहकी बातें ... ।

सहदेव : मौसम का अर्थ तो नहीं जानता, पर एक खास बात है इसमें, बता दो ... ।

प0 छात्र : बात दूं गुरू ?
सहदेव : बता दो !
प0 छात्र : बता दूं ... नहीं तुम्हीं बता दो ... अच्छा बताता हूं । सर इस मौसम की खास बात यह है कि इसमें कोई चीज छिपती नहीं, सब कुछ सभी को साफ दिखाई पड़ता है ...
दू0 छात्र : चाहे कितना छिपाओ ! चाहे कितना बनाओ ।
सहदेव : अब चलो भी यहां से ।
(सब चलते हैं ।)
वा0 चांसलर : रूको, कहां जा रहे हो ? रूको ! क्या मेरी पुकार में अब प्रभाव नहीं रह गया ! या मैं गूंगा और वे बहरे हो गए हैं । नहीं, मैं गूंगा नहीं, वे किसी की पुकार पर जा रहे हैं । इन्हें वह चौराहे पर मिला था । उसके इशारे पर इनके रास्ते मुड़ गए ।
(इस बीच पिता आ खड़ा था)
पिता : आप स्टाफकार में बैठे उधर से गुजरे थे ।
वा0 चांसलर : मेरा एक बहुत जरूरी 'एप्वाइन्टमेंट' था । मगर आपको अपने बेटे की चिंता करनी थी ।
पिता : मेरा विश्वास था, जिम्मेदारी आपकी है ।
वा0 चांसलर : मेरे पास बहुत सारी जिम्मेदारियां हैं ।
पिता : पर अब तो सारी जिम्मेदारी खत्म हो गई ? सारा दोष राजनीति के मत्थे मढ़कर विदेश यात्रा का कार्यक्रम अच्छा रहेगा ।
वा0 चासंलर : आपकी तारीफ ?
पिता : सहदेव शर्मा का पिता ।
वा0 चांसलर : आप कैसे बाप हैं, शर्म नहीं आती ।
पिता : मेरे बेटे को मुझे वापस दे दो साहब ।
वा0 चांसलर : मैं कुछ नहीं जानता ।
पिता : ऐसा क्यों श्रीमान ?
वा0 चांसलर : मेरा वक्त बरबाद मत करो ।
पिता : मेरा बेटा किधर गया ?
वा0 चांसलर : पुलिस को रिपोर्ट करो ।
(वाइस चांसलर जाता है । पिता खड़ा देखता रह जाता है ।)

चौथा दृश्य

(नकुल सेन का घेराव)
सहदेव : शाबाश, नौजवानों की एकता जिंदाबाद ।
पहला : देखो हम आ गए ।
दूसरा : हम पहले से ही डटे हुए हैं ।
युवक : जीत हमारी होगी ।
तीसरा : हमारी होगी ।
(अर्जुन देव, जिंदाबाद के नारे)
सहदेव : अबे चुप । पैसा मैं खिलाऊं ... ।
तीसरा : पैसा जहां से आता है वहीं से मेरा नाता है । जै हो गरीबों के मालिक ... ।
सहदेव : सहदेव शर्मा ।
तीसरा : अर्जुन देव ।
सहदेव : आपकी तारीफ ?
तीसरा : जी मैं कामरेड कुमार के नाम से जाना जाता हूं ।
सहदेव : तो कामरेड कुमार साहब, अब कहिए सहदेव जिंदाबाद ।
कुमार : मैं तो द्वंदात्मक भौतिकवादी हूं । मेरे आर्थिक द्वन्द को समाप्त कर दीजिए, बस । आप तो सचमुच काफी महान् आत्मा है ।
(सहदेव एक लिफाफा देता है ।)
कुमार : सहदेव शर्मा जिंदाबाद ।

युवक : जिंदाबाद ।

(हंसी)

कुमार : इसमें हंसने की क्या बात है ? दृष्टि वैज्ञानिक हो तो, हर रहस्य से पर्दा उठ जाएगा ।

युवक : नकुल सेन हाय–हाय ।

सहदेव : ऐसे काम नहीं चलेगा । टेलीफोन–बिजली काट दो ।

पहला : जल्दी करो ।

(लोग काटते हैं ।)

युवक : पानी पहले ही काटा जा चुका है ।

कुमार : अपने नेताजी अर्जुन देव अब तक नहीं आए । जो वक्त देते हैं उससे डेढ़ घंटे बाद आते हैं, वह भी पूरा हो गया । वह लाए बलराम भाई । आओ भाई बलराम । यही है उसकी लगाम । भाई साहब लाल सलाम ।

(बलराम आता है ।)

बलराम : अरे भाई, इस घेराव का नेता कौन है ?

(कई लोग कहते हैं – मैं हूं जी, मैं हूं जी)

सहदेव : बको मत, अपना काम करो ।

चौथा : जितना दाम, उतना काम । मैं चला, मेरा नाम हरीराम ।

कुमार : ठीक कहता है, मजदूर एकता जिंदाबाद ।

(दोनों चलते हैं ।)

सहदेव : ओए किधर चले ।

हरीराम : जितना दाम, उतना काम ।

कुमार : आम के आम गुठली के दाम ।

(देता है ।)

कुमार : अरे भाई बलराम, नेता जी कहां रह गए ?

बलराम : अरे, साहेब के चपरासी को इस तरह क्यों बांध रखा है । यह कहां का काम है ?

कुमार : इसने हमारा साथ नहीं दिया ।

बलराम : जो तुम्हारा साथ नहीं देगा उसे तुम रहने ही नहीं दोगे ?

कुमार : यह खिड़की से कूदकर साहब को पानी देने जा रहा था नमकहराम । खबरदार जो उसे खोला ।

बलराम : यार यह भी तो आदमी है ।

कुमार : फिर तो नकुल सेन भी आदमी है ।

बलराम : बिलकुल ।

सहदेव : नकुल सेन आदमी नहीं, नहीं तो वह इतने ऊंचे नहीं पहुंचता । वह आदमी नहीं दलाल है पूंजीपति का ।

कुमार : पूंजीवाद का नाश हो ।

(सबके स्वर उठते हैं ।)

सहदेव : हम बलराम भाई की बात मानते हैं कि वह आदमी है ।

कुमार : क्योंकि चपरासी है ।

हरीराम : बेचारा ।

सहदेव : खोल दो ।

(युवक खोलता है – गाता हुआ ... एक बेचारा इस शहर में ...)

कुमार : अबे प्रतिक्रियावादी ! बंदकर यह बुर्जु आ गाना, गाता है तो कोई क्रांतिकारी चीज गा ।

युवक : मसलन ?

कुमार : बताओ बहिन जी ।

लड़की : खबरदार जो मुझे बहिन जी कहा ।

(हंसी)

सहदेव : सावधान । घेराव मजबूत रहे । भीतर जब नकुलसेन का दम घुटने लगेगा, प्यास के मारे तड़पेगा तब हमारी मांगे पूरी होंगी ।

हमारी मांगें ।

सब : पूरी करो ।
सहदेव : इन्कलाब !
सब : जिंदाबाद ।
कुमार : बलराम भाई आप भी आ जाइए इस घेरे में ।
बलराम : मैं देख रहा हूं । भीतर उसे प्यासा तड़पा रहे हो, और खुद बाहर गटर–गटर पानी पी रहे हो ।
कुमार : वर्ग संघर्ष ।
हरीराम : हमारी मांगें ।
सब : पूरी हों ।
(अचानक चपरासी हंस पड़ता है ।)
युवक : अरे इसे क्या हो गया ?
बलराम : अच्छा हंस रहा है ।
चपरासी : साहेब अभी मैंने देखा, एक पानी पी रहा है, पानी जा रही है दूसरे के पेट में । एक जम्हाई लेता है तो दूसरे को नींद क्यों आने लगती है ? एक आदमी है । दूसरा आदमी क्यों नहीं है ?
सहदेव : बधे रहने की वजह से इसका दिमाग घूम गया है । एक बात का दूसरी बात से कोई ताल्लुक नहीं ।
चपरासी : एक का दूसरे से कोई ताल्लुक न रहने पाए । एक के लिए जो आदमी है, दूसरे के लिए वह कुछ और है ।
सहदेव : शी SS नेता जी आ रहे हैं ।
बलराम : अरे मुझे तो यहां यही कहने के लिए भेजा था कि नहीं आ रहे ।
(अर्जुन देव आते हैं । लोग घिर जाते हैं । जै–जैकार, नारेबाजी)
कुमार : सर आप यहां एक क्रांतिकारी भाषण दीजिए ।
देव : प्रेस के लाग आए हैं ।
सहदेव : अभी फोन कर देते हैं सर ।
देव : पर फोन की लाइनें तो कटी हैं । आप लोग भूल जाते हैं । उमर ही ऐसी है । इस उमर में आदमी–आदमी नहीं युवक होता है युवा भावुक होता है । उसकी याददाश्त कमजोर होती है वह बहत है और बहता ही चला जाता है । इसलिए मेरे दोस्तो, इस समय भाषण नहीं । काम ज्यादा बातें कम ।
कुमार : आपको पुराने नारे अब तक याद हैं ।
हरीराम : आपकी स्मरणशक्ति खूब है । वाह ...
युवक : और स्वास्थ्य भी ।
देव : रखना पड़ता है भाई, रखना पड़ता है । न जाने किस नारे की जरूरत कब कहां पड़ जाए । स्मरणशक्ति तो जरूरी है मेरे नौजवान दोस्तो, कहीं से अचानक कोई आवाज आ सकती है । कोई नारा । कोई पुकार । कोई हुंकार । कोई प्रचार । कोई दरबार । कोई सरकार । गरीब और पिछड़े देश का प्रजातंत्र है न, कोई ठिकाना नहीं, कोई पैमाना नहीं । इसीलिए जैसा कि मेरे नौजवाब दोस्त ने कहा –– स्वास्थ्य तो अच्छा रखना ही पड़ता है। इस सिलसिले अखबार वाले तो नहीं है न, ठीक है । आप लोग भारत के भविष्य के कर्णधार हैं । अच्छे स्वास्थ्य का कोई रिश्ता अच्छे चरित्र से नहीं है । अच्छा–बुरा कुछ नहीं है । चरित्र और नैतिकता की बात वही करता है जिसे जीवन में अनैतिक और दुश्चरित्र होने का कोई अवसर नहीं प्राप्त हुआ ये बड़ी व्यक्तिगत बाते हैं । अपने तक ही रखिएगा ।
पहली युवती : कैसे देखता है ?
दूसरी युवती : कैसे बोलता है ?
सहदेव : हमारी मांगें ।
कुमार : अब हम लोग गला नहीं फाड़ेंगे ! बोलिए सर !
देव : हां तो मैं कह रहा था – चरित्र और नैतिकता की बात वही करता है, जिसे जीवन में अनैतिक बनने का कोई सुअवसर नहीं प्राप्त हुआ । कितने लोग हैं, उसी हिसाब से बोलूं, वरना प्रेस वक्तव्य ठीक रहेगा ।
बलराम : यह क्या सुन रहा हूं ? यह कौन कह रहा है ? क्यों कह रहा है ? यही मेरा आदर्श था । इसी के चरित्र, इसी के आदर्शों से आकृष्ट, मंत्रमुग्ध मैं इसके पास आया था ।

कोई बात नहीं, वे आदर्श अब नहीं रहे । जल में अपना प्रवाह न हो, जलस्रोत न हो, तो पानी हवा बनकर उड़ जाता है, जैसे इसके आदर्श उड़ गए, धीरे–धीरे और सन सत्तर के बाद एकाएक । पर आज पहली बार इसके मुंह से आदर्शों को गाली देते हुए सुन रहा हूं । यह भयंकर है ।

(लोग नारे लगा रहे हैं । अर्जुन को घेरे हुए हैं लोग ।)

सहदेव : सर, आप ही इनकी मांगें पूरी करा सकते हैं ।

कुमार : आपकी बात यह नहीं टाल सकता ।

हरीराम : आप जो चाहेंगे वही हो सकता है ।

लड़की : सर, यह हमारी बात तक नहीं सुनता ।

देव : सुनेगा, जरूर सुनेगा । अपना यही उत्साह कायम रखो । मैं अपनी जिंदगी का एक बेशकीमती अनुभव बता दू, यही गुल खिलाएगा ।

(नारे)

युवक : ये हैं इनकी मांगे ।

(कागज लेकर)

देव : इनकी नहीं, हमारी मांगें । कहो हमारी मांगें ।

(नारा)

देव : मैं आप सबका ही हूं । आप ही की पुकार सुनकर यहां आया हूं । आपकी जीत मेरी जीत । आपकी खुशी, मेरी खुशी । में आप सबकी सेवा के लिए ही यहां हाजिर हुआ हूं ।

(अर्जुन देव अंदर जाते हैं ।)

सेन : नमस्ते भाई साहब । बड़ी कृपा की । देखिए क्या हालत कर रखी है । सहदेव शर्मा की वजह से युनिवर्सिटी छात्र यूनियन भी मजदूर यूनियन से मिल गई है ।

देव : मैं तो एक ही बात आपसे कहने आया हूं । इन यूनियन वालों के सामने झुकिएगा नहीं । आपके मालिक से मेरी बात हो चुकी है, किसी भी हालत में फैक्ट्री बंद मत कीजिएगा ।

सेन : आप मेरे साथ हैं, फिर फैक्ट्री क्यों बंद होगी । मारे प्यास के . . .

देव : आप घबड़ाते क्यों हैं । यह लीजिए पानी खतम कीजिए अपनी परेशानी ।

(बोतल मुह पर लगा पानी पीना)

सेन : धन्यवाद ।

देव : अरे भाई मैं कोई गैर हूं जो मुझे धन्यवाद देते हो !

सेन : आप हमारे कितने बड़े मेहरबान हैं ।

देव : इधर आइए, इधर । और इधर । यह जो सहदेव शर्मा हैं न, यह अपना ही आदमी है, इसे कुछ ले देकर छुटट्री कीजिए । जी हां जनाब ।

सेन : यह काम आप ही के हाथों हो जाए तो ।

देव : बड़े होशियार हैं, वाह वाह !

(नोटों भरा लिफाफा लेकर रखना)

देव : और कोई सेवा ?

सेन : घेराव खतम करा के ही जाइए ।

देव : अगर मैं अपने सामने घेराव खतम कराऊंगा न, तो शक पड़ सकता है लोगों को । आप जानते हैं ये यूनियन वाले कितने चंट होते हैं । शुक्र है आपका चपरासी यहां नहीं है । मैं जरा इनकी फोटू खींच लूं । जमाना बदलेगा तो काम आएगा ।

सेन : आप सहदेव को जरा इशारा भर कर देंगे तो ।

देव : ओ हो, आप थोड़ा धैर्य से काम कीजिए ।

सेन : धैर्य की कोई सीमा होती है ।

देव : आप यों समझिए, मैं वहां से घेराव चीर कर यहां अंदर आया । अब अन्दर से बाहर जाकर अगर मैं अपने सामने घेराव खत्म कराऊं, तो यह लोग, जानते हैं क्या मतलब लगाएंगे ? समझिए कि मैं यहां से अपनी कोठी पहुंचा नहीं कि इधर यह खतम !

सेन : बहुत–बहुत शुक्रिया ।

देव : फिर वही बात । एक फोटो और खींच लूं । कमाल है अब तो घेराव में ऐसी–ऐसी लड़कियां भी शामिल होने लगीं । वाह, क्या दृश्य है ।

सेन : मेरा ड्राइवर है, आपको छोड़ आएगा ।

देव : गाड़ी वातानुकूलित है न ?

सेन : जी हां बिलकुल ।
देव : अपनी भी है । सीताराम जी अग्रवाल ने अपने बेटे के जन्मोत्व पर मुझे उपहारस्वरूप ... । मेरी क्या है जी, परमात्मा की है, जरूरत पड़ने पर जनता की है सिद्धान्ततः ।

(हंसी)

देव : देर तक यहां रहना ठीक नहीं । एक सलाह दिए जा रहा हूं । लाख रूपये की सलाह । इन यूनियन वालों में से दो–तीन को फोड़कर अपनी जेब में रखिए । अरे, महीना बांध दीजिए और चैन से रहिए ।
सेन : बहुत अच्छा ।
देव : अच्छा नमस्ते । इनसे हारिएगा नहीं । डटे रहिए । बोतल उधर छिपाकर रखिए । हां ।

(बाहर आना । सैन घिरते हैं ।)

सहदेव : क्या हुआ सर ?
देव : होता नहीं किया जाता है ।

(बढ़ते हैं । भीड़ पीछे है ।)

हरीराम : क्या हुआ सर ?
कुमार : जो होना था हुआ । सुनो ... ।

(गुप्त वार्तालाप – शब्द सुनाई नहीं पड़ा । उधर चपरासी दबे पांव नकुल के कमरे की खिड़की के पास जाता है ।)

चपरासी : हुजूर ! इधर । इधर ।
सेन : क्या है ?
चपरासी : अब काहे का डर । बात कीजिए । अब नेताजी आपके साथ हैं, फिर क्या फिकर।

(उधर)

देव : ठीक । बात आ गई समझ में । घेराव जारी रखो । मैंने बहुत समझाने की कोशिश की, मगर ये नौकरशाह पूंजीपतियों के दलाल हैं, दलाल । घेराव और मजबूत । दबाव में कोई ढील नहीं । सीधे उंगली घी नहीं निकलता । हमारी एकता ... अरे भाई बलराम, यहां चुपचाप क्यों खड़े हो ?
बलराम : देख रहा हूं ।
देव : यह क्या बात हुई – देख रहा हूं । अरे कहो कि सोच रहा हूं ।
सब : जिंदाबाद ।
देव : अच्छा, मंगल कामनाएं । जीत ...
सब : हमारी होगी ।
देव : जीत ... ।

(यही नारे देते हुए प्रस्थान)

सहदेव : नकुल सेन, हमारी मांगें पूरी करो ।
युवक : वरना हम भूख–प्यास से तड़पा कर तुझे मार देंगे ।
सेन : सहदेव को भेजो मेरे पास । मैं उससे बातें करना चाहता हूं ।

(लोग सहदेव को अंदर नहीं जाने देते ।)

कुमार : अब बातें सबके सामने होंगी ।
युवक : गुपचुप का जमाना गया ।
सहदेव : जरा देखूं तो सही, क्या बातें करता है ।
कुमार : कोई अकेला नहीं बात कर सकता यहां तीन यूनियनों के लोग हैं ।
युवक : तू यहां आकर इससे सीधे बात क्यों नहीं करता । तू बड़ा चालाक बनता है ।

(सहदेव युवक को इशारा करता है। कुछ संकेत)

युवक : कोई हर्ज नहीं, सहदेव शर्मा भीतर जाकर बात कर सकते हैं ।
सहदेव : कोई भी फैसला बिना आप सबकी राय के नहीं होगा । विश्वास रखिए । और अगर मुझपर इतना भी विश्वास नहीं तो यहां मेरा होना बेमानी है । आओ विजय ।

(युवक जिसका नाम अब विजय है, उसके साथ जाने लगता है । लोग रोकते हैं ।)

पहला : अरे क्या करते हो गुरू !

हरीराम : अरे भाई, यह तो मजाक हो रहा था ।
सहदेव : मैं भी मजाक ही कर रहा था ।
(लौटता है ।)
कुमार : अच्छा–अच्छा झट अंदर जाओ और हमें बताओ । हमारी एकता ।
सब : जिंदाबाद ।
(सहदेव अंदर जाता है ।)
विजय : सहदेव जिंदाबाद !
कुमार : यार तू यह बता कि किसका चमचा है !
विजय : यह माल के ऊपर मुनहसर है ।
(भीतर का दृश्य)
सहदेव : क्या है । साफ–साफ बोलिए ।
सेन : नेताजी से तुम्हारी कोई बात हुई ?
सहदेव : हां, घेराव और मजबूत करो । तुम मजबूर होकर हमारी मांगें पूरी करोगे, वरना फैक्ट्री में कल स हड़ताल ।
सेन : क्या ? अर्जुन देव ने तो हमसे सौदा तय किया ।
सहदेव : हमारे नेता को खामखाह बीच में मत खींचो । खबरदार उन पर अगर कीचड़ उछालने की कोशिश की । सीधे मुझसे बातें करो ।
सेन : देखो तुम्हें अपना आदमी समझकर बुलाया ।
(एक लिफाफा देकर)
सेन : तुम मेरे अपने हो !
(एकाएक उसी क्षण बलराम की हंसी फूटती है ।)
सेन : यह हंसी ...
सहदेव : घबड़ाइए नहीं अब ।
(बाहर आता है)
सहदेव : बलराम, बंद करो हंसी ।
विजय : चौप्प !
(मुंह दबोचना चाहता है ।)
बलराम : मेरी हंसी से इतना डर । लो चुप हो गया ।
(सन्नाटा)
सहदेव : तोड़ो यह सन्नाटा ! लगाओ नारे । इनकलाब, हमारी एकता ... ।
(सन्नाटा)
बलराम : बिके हुए गुलाम का इनकलाब । रेत के कणों की तरह बिखरे हुए लोगों की एकता । एक लाश का मुर्दों से घेराव ।
सहदेव : विजय, दबोच लो उसे । फेंक दो बाहर । यह कोई दलाल है ।
विजय : प्रतिक्रियावादी ।
कुमार : बुर्जुआ ।
(तीनों उसे दबोचने चलते हैं ।)
बलराम : मैंने जो देखा, यकीन करोगे ? स्वयं क्यों नहीं देखते ? क्या देखना नहीं चाहते ? इतने भयभीत क्यों ? एक बार देख लोगे तो भय मिट जाएगा । मुझे इस तरह घेरकर क्या पाओगे ? यदि तुम लोग मुझे दबोचना चाहते हो तो पहले तुम्हें फैसला चाहिए । यदि तुम लोग मुझे निर्बल बनाना चाहते हो तो पहले तुम्हें शक्तिशाली होना चाहिए । जो मैंने देखा वह देखने पर भी देखने योग्य नहीं है । जो मैंने सुना, वह सुनने पर भी सुनने योग्य नहीं है । सुनो सुनो ! पंजों के बल कोई खड़ा नहीं होता । टांगों को फैलाकर कोई आगे नहीं बढ़ता । जो अपनी बात का दावा करता है, वह स्पष्ट् नहीं है । सुनो ... रूको । देखो ... ।
(नकुल सेन भी उस परिधि में मिल जाता है जैसे मृगया का दृश्य हो । बलराम बीच में घिरा है । वाद्य संगीत धीरे–धीरे उभर रहा है । शेष घेराव करने वाले, दर्शक बने खड़े हैं । अब चपरासी देख रहा है ।)
बलराम : मैंने जो देखा, वही हूं मैं । मेरे तुम्हारे बीच जो अंतर था वह मिट गया । देखने के बीच जो बाधा थी, वह अब खत्म हो गई । पहले आश्चर्यचकित था, फिर लगा यह तो भंयकर है

। अभी जो देखा, अभी, अभी, और इस क्षण जो देख रहा हूं, अब मैं न आश्चर्यचकित हूं न भयभीत
। तुम सब जो हो वह नहीं हो । आओ दबोच लो। बढ़ो । देखो । चारों ओर आंखें ही आंखें ।

(दृश्य चल रहा है । गायन उभरता है ।)

जंगल में एक मृग
भूखे बहेलियों के बीच
कैसी मृगया है देखो देखो
एक स्वर्णमृग और जंगल में
कैसी मृगया है देखो देखो
जंगल में लगी आग कौन बताए
पानी में लगी आग कौन बुझाए
कैसी है आग देखो देखो
कैसी मृगया है देखो देखो ।।

(भीड़ बलराम को घेर लेती है । मौका देख नकुल सेन भाग जाता है । फिर बलराम भागता है । यह देख सहदेव के चमचे बलराम का पीछा करते हैं । मंच पर अकेला व्यंग से मुस्कराराता हुआ चपरासी । प्रकाश बुझता है ।)

दूसरा अंक

पहला दृश्य

(भीम वर्मा बैठे चैक काट रहे हैं । सहायक खड़ा सहायता कर रहा है ।)

कुमार : आज एक चैक मुझे भी भाई साहेब ।

वर्मा : अरे अभी कल तो दिया था । मंहगाई बहुत है । (हंसी) मैं तो मजाक कर रहा हूं – यह लो एक चैक एक हजार, ठीक है ? चलेगा ।

(फोन । सहायक उठाकर)

सहायक : जी हां, आप कौन साहेब हैं । जी नमस्ते । देखता हूं साहेब कहां हैं । (अलग) सत्यप्रिय जी का है ।

वर्मा : कह दो अभी–अभी कहीं चले गए । पूछ लो बात क्या है ?

सहायक : जी, साहब तो अभी अभी, बिलकुल पांच मिनट पहले कहीं चले गए । जी कोई संदेश हो ... जी मुख्यमंत्री ... ।

वर्मा : मुझे दो मुझे । कहो, साहब आ गए ।

सहायक : आ गए साहब आ गए । लीजिए साहब सत्यप्रिय जी का फोन ।

वर्मा : प्रणाम–प्रणाम पूज्यवाई सत्यप्रिय जी, क्या आज्ञा है ? अच्छा, मुख्यमंत्री आपके घर आ रहे हैं । पंडित जी, इस बार मेरे बंगले पर मुख्यमंत्री जी स्वागत–सम्मान में एक शानदार 'डिनर' हो जाए । जी क्यों नहीं ? ओइ ... (सहायक से) क्यों वे नमकहराम पंडित जी का फोन सीधे मेरे पास क्यों नहीं पहुंचता ? खबरदार अगर दुबारा यह गलती हुई, निकाल दूंगा नौकरी से । (फोन पर) पंडित जी मैं क्षमा चाहता हूं । भला आपके सामने मेरी क्या हैसियत । पंडित जी आप तो कभी खिदमत करने का कोे मौका ही नहीं देते । जी ... सुनिए तो ... मुख्यमंत्री के दर्शन ... ।

(फोन रख देना)

वर्मा : मुख्यमंत्री का नाम लेते ही फोन रख दिया । सत्यप्रिय जी जैसे सत्यप्रिय ईमानदार व्यक्ति हमारे लिए सबसे बड़ी समस्या है ।

कुमार : अपने अखबार के संपादकों से कह दीजिए वे मुख्यमंत्री को आपके बंगले पर ले जाएं ।

वर्मा : यह मुख्यमंत्री भी ईमानदार हैं, यही तो झंझट है । खैर, कोई न कोई उपाय तो करना ही होगा । मुख्यमंत्री परिवार का ऐसा कोई व्यक्ति, समझ गए न, पता लगाइए ढूंढिए, उसे अपने यहां कोई बड़ी नौकरी दे देंगे । नौकरी भी क्या, सलाहकार, या कुछ भी बना लेंगे ।

कुमार : ठीक है सर ! यह काम हो जाएगा ।

(फोन बजता है ।)

वर्मा : देखो उठाओ फोन ।

सहायक : जी कौन साहब ? जी देखता हूं । वाइस चांसलर साहब ।

वर्मा : जी । जी देखिए भूमिका बांधने की कोई जरूरत नहीं, अपनी बात पर आइए । जी ... जी मैं बिलकुल समझ गया । देखिए इतना वक्त नहीं है मेरे पास । जी मेरा अखबार आपकी यूनिवर्सिटी का कजरा छापने के लिए नहीं है । जी, आ सकते हैं, मेरे सहायक से समय ले लीजिएगा ।

(फोन रखना । नकुल सेन का प्रवेश)

सेन : नमस्ते भाई साहब ।

वर्मा : क्या हाल है ?

कुमार : मैं बताऊं ।

सेन : आप यहां भी तशरीफ रखे हुए हैं ।

वर्मा : भाई अपने दरवाजे तो सबके लिए खुले रहते हैं । अच्छा कुमार साहब फिर भेंट होगी । हां–हां, ख्याल रखूंगा ।

(कुमार का प्रस्थान)

सेन : क्या हालचाल है भाई साहब ?

वर्मा : खैरियत तो है ?

सेन : कहां है । बहुत मुश्किल में पड़ गया हूं । यह देखिए ।

(फाइल लेकर पढ़ने लगता है । भीतर से पानी का गिलास और दवा की टिकिया लिए श्रीमती आती है ।)

सेन : नमस्ते भाभी जी !

वर्मा : भाभी ? कमाल है, मेरे यहां रहने वाली हर औरत को तुम भाभी कहोगे ?

सेन : गल्ती माफ ।

श्रीमती : दवा खाने का वक्त हो गया है ।

वर्मा : रख दो और जाओ । सुना नहीं, रखकर चली जाओ ।

श्रीमती : आप भूल जाएंगे । वक्त पर दवा लेना बहुत जरूरी है । रात–भर आप ... ।

वर्मा : चलो अंदर । चलो ।

(श्रीमती को खींचकर अंदर ले जाना । सहायक सेन के पास आकर)

सहायक : मारे डर के साहब की धर्मपत्नी नौकरानी बनकर, मजबूरन यहां रह रही है ।

सेन : करना ही पड़ता है ।

सहायक : क्या करना ही पड़ता है। इसका भी कोई अंत है । पता नहीं कितनी ... ।

(वर्मा का प्रवेश)

वर्मा : हां तो सेन साहब, मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूं । मुझे जरा जल्दी है ।

सेन : अर्जुन देव ने धोखा दिया है । मेरी फैक्ट्री में हड़ताल ।

वर्मा : किसने किसको धोखा नहीं दिया है ?

सेन : भाई साहब !

वर्मा : देखिए अभी मैं अर्जुन देव को फोन नहीं कर सकता । हम उद्योगपतियों ने इन राजनेताओं को फोन करके इनका दिमाग खराब किया है । हमीं इन्हें थैली दें, अधिवेशनों, आयोजनों, कार्यक्रमों के नाम पर मुंहमांगा धन दें, और हमीं इन्हें फोन भी करें । इनकी बकवास सुनें !

सेन : हमने कम धन नहीं दिए हैं । और धन दे देकर ही हमने इन्हें चौपट किया है । हम इनसे डरते हैं । ये जनता से डरते हैं । जनता से हमारा कोई संबंध नहीं रहता । अगर संबंध हो तो यह डर टूटेगा, जरूर टूटेगा । नहीं तो यह सर्वव्यापी भय किसीको नहीं छोड़ेगा ।

वर्मा : अरे तुम तो अच्छा खासा भाषण दे बैठे । बहुत परेशान हो । अगर तुम मेरी फैक्ट्री या उद्योग के जनरल मैनेजर होते, तो तुम्हें चौबीस घंटे के भीतर बर्खास्त करके फैक्ट्री की हड़ताल खत्म कर देगा । हड़ताल अपने आप खत्म हो जाती ।

(हंसना)

वर्मा : ध्यान रखो –– राज खत्म होता है । राजनेता, धर्मनेता खत्म होते हैं, धनवान कभी खत्म नहीं होता । संकट के भीतर से धन पैदा होता है, जैसे कीचड़ से कमल । और धनवान पर संकट आते ही धन का रूप बदल देता है धनवान । ये राजनेता पहले के जमींदार हैं । हम इनके साहूकार हैं । ये बेचते हैं हम खरीदते हैं, कच्चा माल, फिर हम बेचते हैं दस गुने दाम पर । लाख, दो लाख, पांच–दस लाख इन्हें दे दिया तो क्या हुआ, वह तो मूलधन है । हम फिर वसूलते भी तो हैं ब्याज, चक्रवृद्धि ब्याज सहित । राज्य और राजनेता जैसे अपना रूप बदलेगा, उसी मुताबिक हम भी अपना रूप बदल देंगे । जो तम्बाकू पीएगा उसे खांसी आएगी, जिसे खांसी आती है वह तम्बाकू जरूर पीता है, यह कुदरत का असूल है ।

(हाथ में कोट लिए श्रीमती आती है ।)

श्रीमती : लो पहन लो, तबीयत ठीक नहीं है ।

वर्मा : तुम फिर टपक पड़ीं ।

श्रीमती : इतना गुस्सा मत करो । तबीयत वैसे ही इनकी खराब है।

वर्मा : अच्छा जाओ अब । खबरदार फिर यहां अपनी सूरत दिखाई ।

(अंदर जाती है ।)

वर्मा : इस बेवकूफ औरत का कोई इंतजाम करना होगा । इला को फोन करो, वह दफ्तर से यहीं आ जाए ।

(सहायक फोन करता है ।)

वर्मा : अच्छा सेन साहब अब और वक्त नहीं है मेरे पास ।

सेन : अच्छा सहदेव शर्मा से ही कह दीजिए ।

सहायक : इला जी यहां के लिए चल पड़ी हैं । वह अभी पहुंच रही हैं ।

वर्मा : ठीक है । इन कागजों को सम्हाल कर रखो !

(सहायक सम्हालकर रखता है ।)

वर्मा : कल रात सहदेव शर्मा आया था । पुलिस तंग कर रही थी उसे मैंने बचा दिया और उससे वादा लिया कि वह नकुल सेन के खिलाफ नहीं जाएगा । उसने वचन दिया ।

सेन : पर कहां, यही तो कहने आया हूं । कितना ब्लैकमेल करता है अर्जुन देव से मिलकर सहदेव शर्मा ।

वर्मा : मिस्टर सेन, हम कोई कम हैं ।

(हंसी । दोनों हंस पड़ते हैं । भीम वर्मा को तेज खांसी । दम फूलने लगता है । पानी लिए श्रीमती दौड़ी आती है । वह पानी पीना चाहता है, पर पी नहीं पाता । इला आती है । उसे देखते ही श्रीमती अंदर जाती है और नकुल सेन प्रणाम कर बाहर आते हैं ।)

इला : तुम भी बाहर जाओ ।

(सहायक जाता है ।)

इला : सर, आपको दुबारा कार्डियोग्राम करा लेना चाहिए ।

वर्मा : अब मैं बिलकुल ठीक हूं ।

इला : डाक्टर बुलाऊं ?

वर्मा : तुम आ गईं ... ।

(देखना)

इला : आप कितने बहादुर हैं ।

वर्मा : बहुत प्यास लगी है ।

इला : यह कैप्सूल खाकर पानी पिएंगे ।

(कैप्सूल लेकर पानी पीता है ।)

वर्मा : और ।

इला : सर, थोड़ा रूककर ।

वर्मा : जानती हो मेरी जिन्दगी में कहीं रूकना नहीं है ।

इला : सर, क्या डायलाग मारा है ।

(हंसी । फिर खांसी । इला सम्हालती है।)

इला : सर, आपको आराम करना चाहिए ।

वर्मा : चोटी पर चढ़कर आराम नहीं किया जा सकता । वहां सिर्फ खड़े रहने की जगह होती है ।

इला : मेरे लिए तो जगह है ?

(देखकर रह जाना ।)

इला : इस बार विदेश यात्रा पर आपके साथ मैं जरूर चलूंगी । कोई और नहीं । क्या सोच रहे हैं ?

(वर्मा की मुस्कान)

इला : क्या देख रहे हैं ।

वर्मा : आज शाम तुम्हारा क्या प्रोग्राम है ?

इला : जैसा आप चाहेंगे ।

वर्मा : घंटी दबाओ ।

(इला घंटी दबाती है । सहायक आता है ।)

इला : ड्राइवर को बोलो गाड़ी ले आए ।

(सहायक जाता है ।)

वर्मा : तुम कैसे समझ गईं कि ड्राइवर ... ।

इला : समझना ही तो है !

(संगीत)

वर्मा : वाह ! और । और ! और ... ।

(फोन की घंटी)

वर्मा : काट दो फोन ! काट दो ।

इला : हेलो ! नकुल सेन !

वर्मा : काटो !

इला : साहब नहीं हैं ।

(फोन रखती है ।)

वर्मा : सब दरवाजे बंद कर लो । पर्दे गिरा दो । संगीत । ठीक फोन काट दो । रोशनी बुझा दो ।

(संगीत)

इला : गाड़ी पोर्टिको में तैयार है ।

वर्मा : पर जाना कहां है ?

(फोन बजता है ।)

इला : (फोन काटने ही जा रही थी) कौन ? सहदेव शर्मा ।

वर्मा : हेलो सहदेव । देखो बेमतलब मुझे फोन मत किया करो । मेरे पी0ए0 को बोल दिया करो । क्या ? क्या ? मेरे घर पर इनकमटैक्स रेड । रात के ठीक दस बजे। बहुत–बहुत शुक्रिया इस सहायता के लिए । अर्जुन देव जी को फोन मिलाओ । भाई जी, मैं भीम वर्मा । आपसे एक बहुत जरूरी काम है । फौरन मैं अभी हाजिर हुआ ।

(जाने लगता है । इला मदद करती है ।)

इला : मैं भी चलूं साथ ?

वर्मा : नहीं, दफ्तर जाओ ।

इला : और आज की शाम ?

वर्मा : बकवास बंद करो !

(जाता है । पीछे–पीछे इला जाती है । सहायक आता है । कागजात सम्हालकर रखता है । श्रीमती का प्रवेश)

श्रीमती : इनकी तबीयत ठीक नहीं है । इन्हें अब क्या चाहिए ? किस चीज की कमी है इन्हें ? बोलते क्यों नहीं ?

सहायक : मैं क्या बोलूं माता जी ।

श्रीमती : इन्होंने कहा – खबरदार अगर तुम्हें यहां रहना है तो नौकरानी के रूप में रह सकती हो । कभी यह मेरी जबान से न निकले कि मैं इनकी धर्मपत्नी हूं । मैंने सब स्वीकार कर लिया ।

सहायक : क्यों ? किसलिए ?

श्रीमती : यह मेरे पति हैं ।

सहायक : पर यह आपको पत्नी नहीं मानते ।

श्रीमती : इनके ना मानने से सब कुछ बदल तो नहीं जाता ।

सहायक : आपके ही मानने से क्या हो गया ?

श्रीमती : मेरा ही मानना सब कुछ है मेरे लिए । दिन–रात इन्हें दौड़ते और और की रट लगाते हुए, हांफते–हांफते आकांक्षाओं की आंधी में चक्कर काटते हुए देखकर मुझे लगा, मेरा पति पुरूष नहीं, शिशु है । शिशु की पत्नी नहीं, प्रिया नहीं, मां चाहिए । जिस आंधी में यह घूम रहा है, वहां मां नौकरानी के अलावा और क्या है ? तुम सोचते हो मैं इतना अपमान सहकर कैसे जीवित हूं ? क्योंकि मेरे लिए मान– अपमान मेरे ही अधीन है । यह किसी का दान नहीं जो मुझसे छीन ले ।

सहायक : यह सब क्‍ा और किससे कह रही हो ?

श्रीमती : तुमने मुझे मां कहा तभी मैं धारा की तरह फूट पड़ी । इनका जो कुछ दुख है वह शुरू से ही जब वह गांव में थे, वहां से लेकर यहां तक, इनका सारा कष्ट अपने आपको ना पाने का फल है । जो मिला जितना मिला वह मिला कहां ? जब लेने वाला है ही नहीं तो मिलेगा किसे ? यह नहीं मिला, यह और, और, वह नहीं मिला, वह और ... यह प्यास कितनी भयंकर है ।

(गायन)

अगर प्यासे को ज्ञान हो कि वह प्यासा है तो उस प्यासे के लिए पानी, पानी है ।
पर यदि उसे पता ही नहीं कि उसकी क्या है प्यास तो पानी पानी नहीं दावानल है उसके लिए ।

दूसरा दृश्य

(अर्जुन देव शशी को कुछ लिखा रहे हैं ।)

देव : आपके सभी तार मिले और समाचार भी । नारी कल्याण भवन का शिलान्यास करने मैं सहर्ष पधार रहा हूं । मेरे आने–जाने का हवाई जहाज का टिकट और मार्ग व्यय के लिए एक हजार रूपये लेकर आपके मंत्री महोदय यहां एक दिन पहले आ जाएं । काफी संख्या में जनता की वहां उपस्थिति अनिवार्य है ।

(बलराम जाता है ।)

देव : इस वक्त अभी बाहर ।

(बलराम लौट जाता है ।)

देव : पढ़ो, मैंने क्या लिखाया ?

(शशी सुनाती है ।)

देव : अंत में यह भी नोट करो कि प्रमुख पत्रकारों का उस अवसर पर रहना बहुत जरूरी है । मैं शिलान्यास के बाद पत्रकार सम्मेलन में एक महत्त्वपूर्ण वक्तव्य दूंगा।

(भीम वर्मा का प्रवेश)

वर्मा : नमस्ते भाई साहब ।

देव : आइए, आइए वर्मा जी । सुनाइए, सुनाइए वर्मा जी ।

वर्मा : भाई साहब बड़ी मुसीबत में हूं ।

देव : शशी, जाओ और बढ़िया कॉफी लेकर आओ ।

(शशी जाती है ।)

देव : हां तो अब बताइए ।

वर्मा : अब क्या बताऊं भाई साहब ।

देव : अरे खैरियत तो है ?

वर्मा : खैरियत नहीं है । आज रात मेरे घर पर इनकमटैक्स वालों का 'रेड' होगा ।

देव : पक्की बात ?

वर्मा : सहदेव शर्मा ने खबर दी है ।

देव : फिर तो पक्की बात । खैर घबड़ाने की बात नहीं, सब ठीक हो जाएगा।

वर्मा : तभी तो सीधे आपके पास दौड़ा आया हूं । आप इतने बड़े नेता, आपका एक फोन हो जाए, बस ! लीजिए भाई साहब ।

देव : रखिए तो । धीरज से काम लीजिए । तो आपने इतनी तरक्की की कि रेड की नौबत आ गई, वाह । क्या–क्या करते हैं आजकल ? कारोबार ?

वर्मा : दो फैक्ट्रियां हैं । अखबार निकालते हैं आपकी सेवा में । इधर कुछ कांट्रेक्ट का भी ... ।

देव : ओहो, तो आप कांट्रेक्टर भी हैं ।

वर्मा : मेरी मदद कीजिए भाई साहब ।

देव : अरे भाई मेरी भी तो मदद कीजिए ।

वर्मा : हुक्म दीजिए, तैयार हूं । पांच हार दस–बीस–तीस ।

देव : ठंडा या गरम ?

वर्मा : इस वक्त तो पानी, गला सूख रहा है ।

देव : प्यासा होना, उत्तम स्वास्थ्य का लक्षण है ।

(शशी कॉफी लेकर आती है । बाहर से बलराम जाता है।)

देव : आ जाओ, आ जाओ, मैं तो भूल ही गया । वर्मा जी, यह शशी है शशी, यह मेरे बहुत पुराने दोस्त हैं ।

वर्मा : उस समय के, जब हम नये–नये यहां आए थे, ओर हमारे पास कुछ नहीं था ।

देव : हम कुछ ढूंढते–तलाशते थे ।

शशी : नमस्ते ।

वर्मा : नमस्ते शशी ।

देव : शशी नही काफी ।

(कॉफी लेते हैं सब)

देव : देखिए वर्मा जी, समझिए आपका काम मैंने कर दिया । पर एक काम मेरा भी कीजिए ।

वर्मा : हुक्म दीजिए ।

देव : शशी को अपने यहां कोई बढ़िया–सी नौकरी दीजिए और इसके रहने के लिए दो 'बेडरूम्स फ्लैट' ।

वर्मा : जी मुझे मंजूर है ।

शशी : पर मुझे मंजूर नहीं । आपने मुझसे शादी करने का वचन दिया है। अब मैं यहां से कहीं नहीं जा सकती ।

देव : अरे वचन तो हमें देना ही पड़ता है बेटी ।
शशी : बेटी ? यह क्या है ?
देव : बेटी माने बेटी । मेरी मजबूरी देखो ।
शशी : मेरी मजबूरी आपसे कहीं बड़ी है ।
देव : अरे हम जनता जनार्दन के आदमी हैं । तुम समझती क्यों नहीं । मैं अब तुम्हें अपने पास और नहीं रख सकता । अभी–इतनी सुन्दर हो, जवान हो । तुम्हारी शानदार शादी कर देंगे ।
वर्मा : तब तक आप मेरे साथ रह सकती हैं ।
शशी : ओह, तो आप लोग यह हैं ।
(दोनों अलग से)
वर्मा : भाई साहब इसे यहां से हटाते क्यों हैं ? खामखा नाराज करने से क्या फायदा । रखिए ।
शशी : क्या कहा ?
देव : मैंने, मैंने तो कुछ नहीं कहा । बलराम तुमने कुछ कहा ?
(वह चुपचाप देख रहा है ।)
देव : वर्मा जी के साथ रहोगी तो मुझे भूल जाओगी । तुम्हारी भलाई इसीमें है ।
शशी : ऐसी बातें आपको शोभा नहीं देती ।
देव : ओह, मुझे उपदेश देगी ।
शशी : नहीं, उपदेश देने का हक सिर्फ आप जैसे महापुरूषों को है ... खरीदने–बिकने के अलावा और कुछ नहीं है जिनके पास ।
देव : क्या बक रही है !
शशी : अब दूसरों की बातें बकवास लगती है । अब भूख और प्यास का कोई अंत नहीं ।
देव : अंदर जाओ ।
शशी : अब अंदर मेरी जगह नहीं । मैं आपकी रखैल नहीं और लड़कियों की तरह । जब तक जी चाहा रखा, फिर बेच दिया या धक्के देकर निकाल दिया ।
देव : सुनो । मेरा नाम है अर्जुन देव । अपने गांव से चलकर इस महानगर में आया हूं कुछ हासिल करने के लिए । शहर के इस स्वयंवर में जो चाहूंगा लूंगा । मेरी ताकत का पता नहीं है तुझे ।
शशी : जुआरी के पास भी कोई ताकत होती है ।
देव : खामोश ।
शशी : लोगों से क्या–क्या वायदे करके यहां आए थे ? कोई एक भी पूरा किया ? लोग बाहर खड़े हैं देखो बाहर ... ।
देव : लोग इसी तरह खड़े रहते हैं जै जैकार के लिए । वे तरसते हैं हमारे दर्शनों के लिए ।
शशी : वे बदल चुके हैं ।
देव : हम भी बदल जाएंगे । बलराम इसे धक्के देकर बाहर निकाल दो ।
(बलराम चुप खड़ा है ।)
देव : अरे खड़ा–खड़ा मेरा मुंह क्या देख रहा है ?
बलराम : क्या होता है भूखा प्यासा जानवर यही देख रहा हूं ।
देव : क्या ?
शशी : आत्मघाती, विश्वासघाती, तुम सबने धोखे दिए हैं । मरोगे, मरोगे, प्यासे कुत्ते की तरह तड़प–तड़प कर मरोगे ।
देव : कहां है मेरी पिस्तौल ?
(ढूंढने लगता है । भीम वर्मा भागने लगते हैं । बलराम रोक लेता है ।)
बलराम : रूको, हम लोग यहां से एक साथ आहर निकलेंगे । तुम्हारे काले धन, इसकी अंध सत्ता और हमारी नपुंसक निराशा से वहां क्रोधाग्नि जल चुकी है। अच्छा हुआ जिसने हमें भावुकता के उस चौराहे से श्रद्धा–आदर्श की डोर में बांधकर हमारे रास्ते से अपनी ओर खींचा था, उन्हीं हाथों ने सब कुछ तोड़ दिया । टूटे हुए विश्वासों के दृश्य के पीछे देखो, उधर देखो, उधर, अग्नि बढ़ रही है । आंधी आ रही है । वायुमंडल में जगह–जगह इतनी असमानता, इतना अंतर, आओ

शशी, धन्य है तेरा यह साहस । भावुकता के जाल में फंसकर जहां हमारा जीवन व्यर्थ था, उसे तार–तार तोड़कर सत्य दिखा दिया ।

देव : बकवास जाकर सड़क पर करो ।

बलराम : पिस्तौल नहीं मिली ? इसके रूपयों की गड्डी के नीचे छिप गई होगी ।

देव : बाहर निकलता है या नहीं ?

वर्मा : पुलिस को फोन करता है ।

बलराम : चुप रहने के लिए भी नैतिक शक्ति चाहिए ।

देव : देखना चाहता है मेरी शक्ति ?

बलराम : हमने देख ली, तुम्हारा दुर्भाग्य हमारी चुनौती । समझता था मैं अकेला हूं । सब सही है, मैं ही झूठ हूं । अब एक से दो हो गया । झूठ और सच की पहचान हो गई ।

देव : मेरे टुकड़ों पर पलने वाला ।

शशी : यह तुम कह रहे हो ? तुम ... ?

देव : पुलिस को रिपोर्ट करता हूं ।

वर्मा : इन्हें गुंडों से पिटवाकर किसी गम्भीर अपराध के मुकदमें में फांसकर ... ।

बलराम : याद रखो, इतने लोग चश्मदीद गवाह हैं ।

देव : अभी बच्चे हो, समझ आ जाएगी । ये लोग, भेड़ हैं भेड़ । इन्हें एक हांकने वाला चाहिए, बस । कहो तो इन्हें अभी तुम्हारे ही खिलाफ कर दूं । पर नहीं, तुम मेरे प्रिय शिष्य रहे हो । मेरे कुछ विरोधियों ने तुम्हें उलटा सीधा पाठ पढ़ाकर फिलहाल मेरे खिलाफ कर दिया है । मुझे पूरा विश्वास है, अकल आते ही फिर मेरे ही पास लौटोगे ... ।

(बलराम शशी के साथ बाहर लोगों में । अर्जुन देव भीमवर्मा के साथ बाहर घूमते हुए – दोनों में गुप्त बातें ।)

विजय : यह उससे मिला है । वह इससे मिला है ।

कुमार : बस, सहदेव शर्मा की कमी है ।

हरीराम : यह नकुलसेन के साथ कहीं खिचड़ी पका रहा होगा ।

पहला : अपनी धर्मपत्नी को नौकरानी बनाकर रखा है ।

दूसरा : कहता है – उद्योगपति हूं ।

तीसरा : यह राजनेता कैसे बन गया । अभी सात साल पहले बी0ए0 की परीक्षा में नकल करते हुए पकड़ा गया था ।

बलराम : आज रात इसके घर पर 'इनकमटैक्स रेड' होगा । वह इसकी मदद करेगा । यह उसकी मदद करता है ।

कुमार : अच्छा यह बात !

हरीराम : कहीं तू न जाके मिल जाना ।

विजय : भाई बात तो समझने दो ।

(उधर)

देव : भाई, क्यों शोर मचा रखा है ? क्या चाहिए ? जो लिखकर लाए हो दे दो, विचार किया जाएगा ।

बलराम : हम उसी पर विचार कर रहे हैं ।

देव : आप लोग किसी के कहने में क्यों आते हैं ?

कुमार : अब नहीं आएंगे ।

वर्मा : अरे कुमार साहब, आप और इन लोगों के साथ ? इधर आइए । एक जरूरी काम है आपसे ! वह जमाना कहां रहा जब कहा जाता था कि कोई एक गाल पर तमाचा मारे तो जवाब में दूसरा गाल ... । बकवास । चलिए सत्यप्रिय जी के पास। वहीं सब कुछ तै हो जाएगा ।

(चलने को होते हैं । शोर –– अर्जुन देव मुर्दाबाद –– भीम वर्मा मुर्दाबाद ।

कुमार : मैं भी एक जरूरी काम से यहां बैठा हूं ।

विजय : हममें से किसी को नहीं फोड़ सकते ।

वर्मा : क्या ?

देव : भाइयो और बहनो, आप लोग किसी के बहकावे में न आएं, क्योंकि आप अपने ही लोग हैं, इसलिए कहता हूं कि पहले अपने दिलों पर हाथ रख लें, फिर इधर देखें। कोई कदम उठाने से पहले आप लोग आंख खोलकर देख लें कि आप लोग कहीं उसी डाल को तो नहीं काट रहे हैं जिस पर खुद बैठे हैं । ये तो गिरेंगे ही, अपने साथ सबको लेकर डूब जाएंगे । यह देश बहुत लंबे

समय से गरीब है, निर्बल है । हम भी उसी के एक हिस्से हैं । तो भाइयो सोच विचार के कदम उठाना । यह भी ध्यान रहे कि तुम्हें कौन भड़का रहा है ? क्या है तुम्हारी आड़ में उसका स्वार्थ ?

मैं सदा से आपका आदमी हूं ।

विजय : आप आदमी नहीं नेता हैं ।

कुमार : जैसे यह आदमी नहीं शोषक पूंजीपति हैं ।

देव : देखो देखो, ये हवाई बातें हैं । यह हवा में उड़ते हुए चंद अल्फाज हैं जो हमारे कानों से टकराकर हमारी जबान पर आ जाते हैं । बुनियादी समस्या इस मुल्क की राजनीतिक और आर्थिक है ।

शशी : और आप दोनों मिलकर दोनों समस्याओं का कोई एक हल ढूंढ रहे हैं ।

देव : बिलकुल हल हमें ढूंढना ही होगा ।

बलराम : और वह हल यह कि समाज की सारी शक्ति राजनीति के हाथों में चली जाए । अर्थ गुलामी करे राजनीति की, या राजनीति गुलामी करे अर्थ की – दोनों का एक ही लक्ष्य है – लक्ष्य नहीं, मजबूरी, बल्कि सहज निर्यात कि सारी ताकत एक मुट्ठी में आ जाए ।

देव : यह शख्स जो खामखा बकवास कर रहा है यह चोर व्यक्तिवादी और प्रतिक्रियावादी है । यह लोकतंत्र का शत्रु है । इसे बाहर करो अपनी जमात से ! दूर हो जा । चला जा यहां से ।

वर्मा : भाई साहब, क्यों खामखा ... । चलिए अंदर चलिए ।

देव : तुम भी कमाल करते हो वर्मा जी, मेरे बंगले के बाहर मेरे अपने लोग, मेरे जिगर के टुकड़े इस तरह खड़े रहें और मैं अंदर चला जाऊं । आप जाइए अंदर । आपको इनसे क्या हमदर्दी ? देखिए मैं सिद्धांत की बात कर रहा हूं वर्मा जी, इसमें बुरा मानने की कोई जरूरत नहीं । सारा धन, सारी सत्ता प्रजा की है, इसमें किसी खास व्यक्ति की कोई व्यक्तिगत हैसियत नहीं ।

बलराम : और प्रजा के नाम पर देश का सारा धन, सारी सत्ता ... ।

देव : बकवास ! हट जा मेरी आंखों के सामने से ।

बलराम : तुझे समाज से नहीं, देश से नहीं, व्यक्तियों से भय है, व्यक्तिगत संपत्ति से, व्यक्तिगत विचारों से ! ऐसे व्यक्ति बगावत कर सकते हैं, नहीं है तेरा भय ।

(शोर, सहदेव को पकड़ लेने के लिए कुछ युवक दौड़े आते हैं)

देव : रूको, खबरदार अगर एक कदम भी आगे बढ़े ! सहदेव, क्या बात है ?

सहदेव : किसी ने इन्हें मेरे खिलाफ भड़का दिया है ।

देव : क्या ?

सहदेव : ये मेरी जान के पीछे पड़े हुए हैं ।

देव : सो तो है । इधर देखो !

बलराम : अब भी वक्त है तुम भी इधर आ जाओ सहदेव !

वर्मा : तुम्हारी यह हिम्मत !

देव : सहदेव, हमारे पीछे खड़े हो जाओ । हां, ठीक है, वर्मा जी, आप अंदर जाइए । फोन कीजिए पुलिस बुलाइए ।

प0 छात्र : अब कोई नहीं बच सकता । इस मौसम की यही विशेषता है, सब कुछ साफ–साफ दिखाई देने लगता है । कहीं कोई चीज अब आंखों से ओझल नहीं होती । सब कुछ दिखाई दे रहा है । घेर लो इन्हें, हम खुद पुलिस को फोन करेंगे ।

(लोक बढ़ते हैं । वे तीनों भागते हैं । शोर)

तीसरा दृश्य

(सत्यप्रिय के बरामदे में नकुल सेन की पुकार । सत्यप्रिय के अलावा हर चरित्र के प्रवेश से पहले नेपथ्य से उसके खिलाफ नारे)

सेन : सत्यप्रिय जी, सत्यप्रिय जी ।

(सत्यप्रिय का प्रवेश)

सेन : नमस्ते, मैं बहुत मुसीबत में पड़ गया हूं । सहदेव शर्मा, भीम वर्मा और अर्जुन देव, सबने मिलकर मुझे बर्बाद कर देना चाहा है ।

सत्यप्रिय : अपनी बर्बादी में तुम्हारा स्वयं कितना हाथ है, इसका हिसाब किया है ?

सेन : मैं पिछले ग्यारह सालों से जनरल मैंनेजर हूं । कभी कोई समस्या नहीं आई । पर जब से सहदेव शर्मा युवा–छात्र नेता हुआ है । अर्जुन देव के इशारे पर भीम वर्मा से मिलकर मेरी फैक्ट्री में हड़ताल ... । मैं अब नौकरी से हटा दिया जाऊंगा ।

सत्यप्रिय : सच–सच बताओ, अर्जुन और सहदेव को मुंहमांगा धन देते रहे हैं या नहीं ?

सेन : मरता क्या न करता ।

सत्यप्रिय : कभी विरोध किया ?

सेन : विरोध करके मैं जिन्दा रह पाता ।

सत्यप्रिय : चाहते क्या हो, तुम्हारी तरफ से लड़ाई लडूं । तुम्हारी अफसरशाही उसी दिन भ्रष्ट हो गई जिस दिन तुमने अपने आपको मालिक और अपने कार्यकर्त्ता को नौकर समझा ।

(भीम वर्मा का आना)

वर्मा : आप जरा इधर हट जाइए । बहुत जरूरी है ।

सेन : यह क्या तरीका है ।

वर्मा : सत्यप्रिय जी ... ।

सत्यप्रिय : पहले मैं इनसे बात पूरी कर लूं ।

वर्मा : वक्त नहीं है।

सेन : किसके पास वक्त है ।

वर्मा : सत्यप्रिय जी, बचाइए मुझे, रात को मेरे घर पर पुलिस और इनकमटैक्स 'रेड' हुआ है । मैं फरार हूं । पुलिस गैरजमानती वांरट के साथ मुझे गिरफ्तार करने के लिए ढूंढ रही है । अर्जुन देव ने मुझे धोखा दिया ।

सत्यप्रिय : आश्चर्य है, हर कोई कहता है उसे दूसरे ने धोखा दिया । वह दूसरा कौन है ?

सेन : वह आ रहे हैं अर्जुन साहब ।

(अर्जुन देव का प्रवेश)

देव : बचाइए सत्यप्रिय जी, आपके सिवा और कोई ताकत मुझे नहीं बचा सकती ।

वर्मा : सारी मुसीबतों की जड़ आप हैं ।

देव : तमीज से बातें करो, तुम्हारी वजह से मेरे बंगले पर भी 'रेड' हुआ, वरना किसकी हिम्मत थी ।

सेन : आप दोनों जिम्मेदार हैं मेरी फैक्ट्री में हड़ताल कराने और मेरी नौकरी खत्म कराने के लिए ।

देव : चुप रह, दो कौड़ी का आदमी ।

सेन : आपके हर आगमन पर मेरे ही हाथों सौ–सौ के नोटों से भरा एक लिफाफा दिया जाता था, भूल गए ।

वर्मा : हर महीने सात हजार रूपये मैं देता था, ऊपर से कभी चुनाव चंदा, कभी अधिवेशन खर्चे, कभी गुप्तदान, कभी यह, कभी वह ।

देव : मुझसे कितने–कितने गलत, गैरकानूनी काम कराते रहे हो, बताऊं शुरू से अब तक ?

वर्मा : रेड मैं तुमहारे यहां जितना धन, आभूषण, विदेशी सामान, चोरी की मूर्तियां, पिस्तौल, बंदूकें ...

देव : देवालयों से मूर्तियों की चोरबाजारी तेरा चंदा है । कितनी बार इसने मुझसे मदद मांगी है, और मैंने इंकार किए हैं ।

वर्मा : कितने–कितने वायदे किए थे, और हर वायदे की कीमत ।

देव : लाईसेंस के केस से किसने छुड़ाया ? उस लड़की की हत्या तेरे बंगले पर हुई थी, तुझे किसने बचाया था ? क्या कीमत दी थी तूने ?

वर्मा : पिछले एलक्शन में जब जमानत जब्त हो रही थी डेढ़ लाख खर्चा कर मतदाताओं को किसने खरीदा ?

देव : इसके अलावा और भी कोई काम कर सकते थे ?

वर्मा : मुझे मजबूर मत करो, वरना सब कुछ खोलकर रख दूंगा । ऐसे नंगे हो जाओगे कि उसे कोई नहीं ढक पाएगा ।

देव : पहले मैं तार–तार करता हूं – अभी इसी वक्त कोई परवाह नहीं, चाहे जो हो जाए।

सत्यप्रिय : आप दोनों शांत हो जाइए ।

देव : इसकी हिम्मत यह मेरे सामने जबान खोले । इस ट्टपूंजिए को मैंने बनाया । और अब मुझे आंख दिखाने चला है ।

वर्मा : तुझे नेता किसने बनाया ?

सत्यप्रिय : अब समझ में आ रहा है क्यों इस तरह से समाज गिरता–बिखरता जा रहा है ।

देव : देखिए सत्यप्रिय जी, इस तरह के भाषण तो मैं देता ही रहा हूं ।

सत्यप्रिय : मैं भाषण नहीं दे रहा, रो रहा हूं ।

देव : फिर रो लीजिएगा । रोने के लिए तमाम वक्त है, अनेक जगह और अवसर हैं । ऐसा मैं खुद करता रहा हूं । लोग सोचते हैं राजनेता बन जाना बहुत आसान है । अपनी निजी जिन्दगी, परिवार, स्वास्थ्य और उसूलों की जो कीमतें मैंने चुकाई हैं, एक कीमत किसी को चुकानी पड़ जाए, तो पैर के नीचे से जमीन खिसक जाएगी। और इन कीमतों के बदले मिला क्या, बंगला, जै जैकार, हवाई यात्रा, प्राइवेट सेक्रेट्री, फूलमालाएं, जिसे देखकर कौन नहीं जलता और कौन नहीं गाली देता, हर पैसे वाला, हर अफसर जलता है और हमारे खिलाफ नीचे से ऊपर तक हवा बांधता है – राजनीति गंदी चीज है, राजनेता कितना भ्रष्ट है । कोई राजनेता अपने बेटे–बेटी को प्यार नहीं कर सकता । अपने साथ नहीं रख सकता, यह है हमारी कमाई । इसके साथ पुलिस मुझे भी गिरफ्तार करेगी यह है मेरी कीमत । पिछले बीस–बाइस वर्षों से भाषण देता रहा आज कुछ बात करने की कोशिश कर रहा हूं ... ।

सत्यप्रिय : क्या बात है वर्मा जी ?

वर्मा : इन्हीं से पूछिए ।

देव : अब भी, आज भी मैं ही बताऊं ?

सत्यप्रिय : यह क्या ? कौन लोग हैं ?

(युवकों–छात्रों की पकड़ से भागता हुआ सहदेव आता है । देव, वर्मा और सेन भीतर छिप जाते हैं । दूसरी ओर से बलराम आता है ।)

सहदेव : बलराम मुझे बचाओ । ये मुझे जान से मार डालना चाहते हैं । सत्यप्रिय जी ... ।

सत्यप्रिय : लोग तुम्हारे भी दुश्मन हो गए ?

सहदेव : जी हां वाइस चांसलर और शहर के कुछ गुंडों ने मिलकर मेरे खिलाफ छात्रों को भड़का दिया है । वे मेरी जान लेने पर तुले हैं । बचाइए ।

(युवकों–छात्रों की भीड़ – शोर – आवाजें)

विजय : सहदेव शर्मा गदद्ार हैं ।

सब : गदद्ार हैं ।

कुमार : वह पूंजीपति और नेता का एजेंट है । दलाल है ।

सब : पकड़ो । मारो ।

सत्यप्रिय : शांत ।

(सब शांत हो जाते हैं । इसके बीच धीरे–धीरे और लोग आकर घिर जाते हैं ।)

सत्यप्रिय : तुम तो इनके नेता रहे हो । जाओ सामने बातें करो । भागकर कहां जाओगे ?

सहदेव : आप इनसे कह दीजिए कि मैं गदद्ार नहीं हूं । चरित्रवान हूं । इन्हीं का हूं ।

सत्यप्रिय : मैं कोई गलत बयान नहीं दे सकता ।

सहदेव : किसी उपाय से मुझे बचा लीजिए ।

सत्यप्रिय : तुम्हारे अलावा तुम्हें और कोई नहीं बचा सकता ।

सहदेव : मैं बेकसूर हूं । मुझे लोगों ने अपने स्वार्थों के लिए इश्तेमाल किया ।

सत्यप्रिय : उनके द्वारा इश्तेमाल होने में तुम्हारा स्वार्थ नहीं था ? हर कोई दूसरे पर जिम्मेदारी डालकर अपने झूठों–अपराधों कुकर्मों से मुक्त होना चाहता है । यह संभव नहीं है । सब एक दूसरे को देख रहे हैं । स्वीकार कर लो अपने आपको, जो भी हो, जो भी किया है स्वीकार कर लो । अब भी वक्त है ।

सहदेव : ये मुझे जिंदा नहीं छोड़ेंगे ।

सत्यप्रिय : क्या तुम जिन्दा हो ?

सहदेव : आप ही मुझे बचा सकते हैं ।

सत्यप्रिय : और तुम ! अब तक क्या करते रहे ?

सहदेव : मैंने ऐसा कुछ भी नहीं किया ।

लोग : पकड़ लो । भागने न पाए ।

बलराम : सहदेव, सामना करो सच्चाई का । इस क्षण को हाथ से न जाने दो । जो भीतर छिपे हैं उन्हें लाओ बाहर । जो बाहर खड़े हैं, इनसे भागो नहीं । ये सब हमारी तरह समय के चौराहे पर खड़े हैं, इन्हें दिखा दो, क्या है सच्चाई । जो शक्तियां इन्हें भेड़–बकरी की तरह इस्तेमाल कर रही हैं, दो उनकी पहचान ।

सहदेव : नहीं, नहीं ।

(भीड़ उत्तेजित है । सहदेव अंदर भागता है । बलराम पीछा करता है।)

सत्यप्रिय : इस तरह अंदर कोई नहीं छिप सकता । अंदर भागकर कोई नहीं बच सकता । सबको बाहर आना होगा !

(सब बाहर निकलते हैं ।)

सेन : यह सब तेरी वजह से हुआ ।

सहदेव : यह आग तेरी लगाई हुई है ।

देव : असली जड़ कहां है ।

वर्मा : यह है जो बड़ा सत्यप्रिय बना फिरता है । फोन करो मुख्यमंत्री को, कहो वह पुलिस कमिश्नर और इनकमटैक्स चेयरमैन से फोर बातें करें, मैं बेकसूर हूं ।

देव : मुझे दो फोन, मैं बात करता हूं ।

सेन : कुछ ले देकर काम बन जाए ।

सहदेव : ये सब अपराधी हैं ।

सत्यप्रिय : और तुम ?

वर्मा : भूलो नहीं मैं दो अखबारों का मालिक हूं ।

सत्यप्रिय : अपने अखबारों में कभी सच्ची खबरों–घटनाओं को छापा ?

वर्मा : सोच लीजिए सत्यप्रिय जी, अपने अखबारों में आपके बाबत सच्ची कहानियां बनाकर इस तरह सचित्र छपेंगी कि आपका सारा नाम मिटट्ी में मिल जाएगा ।

बलराम : क्या कहा ? तुम्हारी यह हिम्मत ।

सत्यप्रिय : जो सच्ची कहानियां बना सकता है, उससे बड़ा हिम्मतवाला कौन है ? सुनो, तुम्हारे अखबार में छपने से अगर मेरा नाम, चरित्र मिटट्ी में मिल सकता है तो मुझे नहीं चाहिए यह झूठा नाम और चरित्र । ले जाओ, मिला दो इसे मिटट्ी में ।

वर्मा : सोच लीजिए अब भी समय है ।

सत्यप्रिय : अब समय नहीं है । समय किसी का उतना ही है जितने को वह उत्तर देता है ।

सेन : आपको इससे कोई हमदर्दी नहीं ?

सत्यप्रिय : तुम्हें हम सबसे कोई हमदर्दी नहीं ?

सेन : तो हममें और आप में फर्क क्या रह गया ?

सत्यप्रिय : कोई फर्क नहीं । जो कुछ भी मेरे चारों ओर हुआ है, हो रहा है, मैं भी उसका हिस्सेदार हूं । हर घटना में मेरा भी हाथ है ।

(भीड़ बढ़ती है । चारों भागते हैं ।)

बलराम : पकड़ लो जाने न पाए । घेर लो ।

(लोग उन्हें पकड़ने दौड़ते हैं । सत्यप्रिय पुकारते हुए उनके पीछे–पीछे दौड़ते हैं ।)

सत्यप्रिय : सहदेव, नकुल, भीम, अर्जुन कहां भागते हो । रूको । भागो नहीं । सहदेव, नकुल, भीम, अर्जुन . . . । सुनो, जो अपने वर्तमान से पीछे भागता है वह मारा जाता है ।

(लोगों की भीड़ पर वे चारों पिस्तौलें दागते हैं । लोग मरते हैं वे चारों फिर भाग जाते हैं । सत्यप्रिय यह दृश्य देख द्रवित हो जाते हैं ।

(वृंद गायन)

आह ! ये क्या किया
तूने ये क्या किया
किसने मारा कौन जिया
आह ! ये क्या किया !

तीसरा अंक

(वही मध्यांतर से पूर्व का दृश्य)

सत्यप्रिय : आह ! ये क्या किया !
तूने ये क्या किया !
किसने मारा
कौन जिया
आह ये क्या किया ?
(वृंद गान)
समय उतना ही अपना है
भागना केवल सपना है
जितने को हम देते उत्तर
समय उतना ही अपना है ।
(इस बीच वही पांचों पांच पांडव हो गए हैं । चुपचाप बैठे कुछ खा रहे हैं । तेज संगीत उभरकर बहुत दूर चला गया है । वही पांचों पांडव बैठे हैं । लोग जहां मरे पड़े हैं, उन्हीं के बीच रक्त जल सरोवर हो गया है ।)

अर्जुन : पानी कहां है ? ओह कितनी प्यास लगी है ।
भीम : मारे प्यास के मेरा कंठ सूख रहा है ।
नकुल : सहदेव, हम सब भाइयों में तुम सबसे छोटे हो जाओ, देखो आस–पास पानी कहां है ?
सहदेव : मुझे भी बहुत प्यास लगी है ।
नकुल : सबको प्यास लगी है, जल्दी करो !
सहदेव : जाता हूं ।
भीम : बहुत जल्दी पानी पीकर आओ ।
अर्जुन : हमें बताओ पानी कहां है ।
नकुल : आवाज दे देना, हम सब वहीं आ जाएंगे ।
सहदेव : जाता हूं ।
(जाता है । मरे पड़े हुए लोगों के बीच में पानी भरा सरोवर दिखता है ।)
सहदेव : आह ! अथाह–निर्मल पानी भरा सरोवर । जी भर पीकर पहले अपनी प्यास बुझा लूं ।
(पानी पीने लगता है । यक्ष की आवाज आती है ।)
यक्ष : रूको ! इस तरह जल नहीं पी सकते ।
सहदेव : क्यों ? कौन हो तुम ?
यक्ष : यक्ष, इस जल का स्वामी ।
सहदेव : जल का स्वामी प्रकृति है ।
यक्ष : तो जाकर प्रकृति से मांगो ।
सहदेव : चारों ओर प्रकृति है ।
यक्ष : चारों ओर तुम्हारा मैं हूं ।
सहदेव : मैं प्यासा हूं । पहले मुझे पानी पीना है ।
यक्ष : यहां पानी वही पी सकता है जो पहले मेरे प्रश्नों का उत्तर दे ।
सहदेव : तुम कौन हो ?
यक्ष : मैं समय हूं । तुम वर्तमान हो । वर्तमान को अपने समय का उत्तर देना होगा ।
(सहदेव जल पीनी बढ़ता है ।)
यक्ष : सावधान ! अपने समय के प्रश्न का उत्तर दिए बिना यदि एक बूंद भी जल पिया, तो मर जाओगे ।
सहदेव : क्या चाहते हो ?
यक्ष : उत्तर ।
सहदेव : कैसा उत्तर ?
यक्ष : समय क्या है ?
सहदेव : समय समय है ।

यक्ष : समय एक प्रश्न है । उत्तर दो ।
सहदेव : समय आने पर समय को उत्तर मिल जाएगा ।
यक्ष : कौन देगा उत्तर ?
सहदेव : समय ।
यक्ष : समय को उत्तर तुम्हें देना होगा । नहीं तो समय तुम्हारे लिए काल होगा ।
सहदेव : मुझे प्यास लगी है । प्यास बुझाकर उत्तर दूंगा ।
यक्ष : उत्तर प्यास में ही है।
सहदेव : मेरा कंठ सूख रहा है । मैं अभी उत्तर नहीं दे सकता ।
यक्ष : उत्तर भविष्य में नहीं, अभी, अभी, वर्तमान में है ।
सहदेव : देखते नहीं मैं कितना प्यासा हूं ।
यक्ष : मैं कितना प्यासा हूं, समय से त्रस्त सारी प्रजा कितनी प्यासी है ?
सहदेव : जिसे प्यास होगी, वह पानी ढूंढ लेगा ।
यक्ष : प्यास क्या है ? पानी कहां है ?
सहदेव : यह भी कोई प्रश्न है ।
यक्ष : तुम्हारा प्रश्न क्या है ?
सहदेव : मुझे प्यास लगी है ।
यक्ष : क्यों ? यह कैसी प्यास है ?
सहदेव : देखते नहीं !
यक्ष : तुम देखते हो ?
सहदेव : देखता क्यों नहीं ?
यक्ष : यही देख रहा हूं ।
सहदेव : चुप रहो ।
यक्ष : मेरे प्रश्न का उत्तर क्यों नहीं देते ?
सहदेव : देखते नहीं, मैं प्यासा हूं ।
यक्ष : मैं तुमसे कहीं ज्यादा प्यासा हूं । तुम्हारी प्यास जल की है । मेरी प्यास उत्तर पाने की है ।
सहदेव : स्वयं उत्तर ढूंढो ।
यक्ष : उत्तर के लिए एक दूसरा चाहिए ।
सहदेव : मेरे पास समय नहीं ।
यक्ष : समय है । देखो मुझे, तुम्हें कितना समय चाहिए ?
सहदेव : मुझे इस तरह निरर्थक बातें करने की आदत नहीं ।
यक्ष : क्यों ?
सहदेव : मेरा स्वभाव ।
यक्ष : तुम्हारा स्वभाव क्या है ? दूसरे के बहकावे में आना । चुनौतियों से भागना । क्रोध करना । अपने–आपको छिपाने के लिए झट आवेश में आ जाना । प्रतिक्रिया करना।
सहदेव : चुप रहोगे या नहीं ?
यक्ष : युगों से चुप था । अब असह्य हो गया । तुम्हारी प्यास असह्य है, पर मेरी भी है । तुम प्यास बुझाने इतनी दूर से आए, मैं यही जलतट पर खड़ा हूं प्यासा ।
सहदेव : मेरा तुमसे कोई संबंध नहीं ।
यक्ष : यही मेरे लिए असह्य है । सुनो–सुनो मेरा प्रश्न, हमारा संबंध क्यों नहीं है ? यह संबंध कैसे टूटा ?
सहदेव : मैं यहां किसी प्रश्न का उत्तर देने नहीं आया ।
यक्ष : फिर यह जल विष है तुम्हारे लिए ।
सहदेव : पहले प्यास बुझा लूं । फिर उत्तर दूंगा ।
यक्ष : उत्तर प्यास में ही है । प्यास बुझत ही प्रश्न निरर्थक लगने लगेंगे ।
सहदेव : कहां है ? सामने क्यों नहीं आता ।
यक्ष : देखो, अपने आसपास !
(मरे हुए लोगों को देखता है ।)
सहदेव : यही है तू ?
यक्ष : देखो !

सहदेव : असंभव ।
यक्ष : संभव क्या है ?
सहदेव : मेरे पास इतना समय नहीं ।
यक्ष : समय क्या है ?
सहदेव : चुप रह । तू नहीं जानता मेरी शक्ति । मैं पांडव–पुत्र हूं ।
यक्ष : कब तक पुत्र बने रहोगे ? पुरूष कब होंगे ?
सहदेव : मैं पुरूष हूं । देखते नहीं ?
यक्ष : पुरूष का लक्षण धैर्य है ।
सहदेव : प्यास बुझा लूं तो देखना मेरा धैर्य ।
यक्ष : धैर्य क्या है ?
सहदेव : अब तक तुझे सहता रहा, यही है धैर्य !
यक्ष : वर्तमान उत्तर क्यों नहीं देता !

(सहदेव बिना उत्तर दिए जल पीता है और अचेत वहीं गिर पड़ता है । यक्ष प्रकट होता है ।)

यक्ष : लोग कहते हैं हमारे यहां कभी परमार्थ व धर्म का लोप नहीं हुआ । कभी अर्थ का भी नाश नहीं हुआ । हमने किसी प्राणी के प्रार्थना करने पर कभी कोरा जवाब नहीं दिया । किसी को निराश नहीं किया । फिर भी आज हम धर्मसंकट में कैसे पड़ गये ? सीधे प्रश्नों के उत्तर क्यों नहीं ? केवल अपनी प्यास ।

(किसी की पुकार आती है – 'सहदेव ! सहदेव ! कहां हो ?' पुकारते हुए नकुल का आना)

नकुल : तुम यहां मजे से सो रहे हो । हम सब वहीं थके–प्यासे, तुम्हारी राह देख रहे हैं । अरे, कुछ बोलते क्यों नहीं ? पानी पीकर ... ।
यक्ष : यह मर चुका है । जब पहले नहीं बोला तो अब क्या बोलेगा ।
नकुल : कौन हो तुम ?
यक्ष : जी हूं । सामने हूं ।
नकुल : इसे किसने मारा ?
यक्ष : स्वयं मरा । बिना उत्तर दिए पानी पीने चला था । तुम भी प्यासे हो । सावधान, बिना मेरे प्रश्नों के उत्तर दिए, जो भी यहां जल पीएगा, वह जीवित नहीं बचेगा ।
नकुल : तो मेरे निर्दोष भाई को तूने मारा ?
यक्ष : स्पष्ट बात सुनते क्यों नहीं ? बिना उत्तर दिए उसे जल पिया स्वयं मर गया । उत्तरदायित्व उसी पर था ।
नकुल : क्या बकवास करते हो ।
यक्ष : तुम्हारे मैं के अलावा और सब कुछ बकवास है ?
नकुल : मैं पूछता हूं यह मरा क्यों ?
यक्ष : इसने आत्महत्या की !
नकुल : असंभव !
यक्ष : संभव क्या है ?
नकुल : उत्तर न देना इतना बड़ा अपराध था ?
यक्ष : उत्तर दो ।
नकुल : प्रश्न क्या था ?
यक्ष : उसे पता था ।
नकुल : क्या ?
यक्ष : जो अपने समय का उत्तर नहीं देता वह जीवित रहने का अधिकारी नहीं ।
नकुल : तो मृत्यु की जिम्मेदारी उस पर है ?
यक्ष : क्योंकि जीवन की जिम्मेदारी से वह चुप रहा ।
नकुल : पता है, किससे जवान लड़ा रहे हो ?
यक्ष : पता है तुम किसके सामने खड़े हो ?
नकुल : ओह ! मारे प्यास के दम घुटा जा रहा है ।
यक्ष : मारे प्यास के मेरा दम क्यों घुटा जा रहा है ?
नकुल : मुझे अपनी प्यास बुझानी है ।

यक्ष : मैं युगों से यहीं प्यासा खड़ा हूं ।
नकुल : वाचाल । तुम पानी के स्वामी बनते हो ।
यक्ष : उत्तर देना और पाना ही स्वामित्व है ।
नकुल : पहले पानी पी लूं फिर देखता हूं तुझे ।
(नकुल पानी पीने चलता है ।)
यक्ष : मेरे प्रश्न का उत्तर दिए बिना यदि जल पिया, तो वही गति तुम्हारी भी होगी ।
नकुल : मैं तेरी बकवास से डरने वाला नहीं ।
यक्ष : सावधान ! पानी पीने का साहस न करो । इस जल पर मेरा अधिकार है । उत्तर देकर पहले मुझसे जल पीने का अधिकार लो, वरना मृत्यु ... ।
नकुल : देखूंगा ।
यक्ष : फिर देख नहीं पाओगे ।
नकुल : तू मुझे समझता क्या है !
यक्ष : जो हो तुम ।
नकुल : पता है मैं क्या हूं ।
यक्ष : यही तो, क्या हो तुम ?
नकुल : मैं मैं हूं ।
यक्ष : यह उत्तर नहीं, अहंकार है ।
नकुल : हम नरवीर पांडु बंधु वनवास बिताने यहां द्वैतवन में आए हैं । जानते हो पांडुवीर क्या हैं ?
यक्ष : क्या है ?
नकुल : चुप रहते हो या नहीं ?
यक्ष : नहीं ।
नकुल : अभी बताता हूं नराधम ...
(बिना उत्तर दिए नकुल जल पीता है और वही अचेत होकर गिरता है ।)
यक्ष : जो प्रत्यक्ष है, वर्तमान है, यही क्यों इतना प्रबल है; अगर यही चिरस्थायी होता, तो दुख का अंत न रहता । पर वर्तमान उत्तर क्यों नहीं देता ? वह अतीत से बंधा है क्या ? प्रश्न वर्तमान में है तो उत्तर अतीत में नहीं हो सकता – यह अपने–आपको नरवीर कहता है । नर क्या है ? वीर क्या है ?
(कोई पुकार रहा है – सहदेव – नकुल – सहदेव – नकुल, पुकारते हुए भीम का आना ।)
भीम : कौन हो तुम ? यहां इस तरह क्यों खड़े हो ? इधर कहीं मेरे भाइयों को देखा है ?
यक्ष : तुम्हारे भाई प्यासे थे ?
भीम : हां, मैं भी प्यासा हूं । वे पानी की तलाश में निकले थे ।
यक्ष : वे मरे पड़े हैं ।
(भीम का क्रोध से देखना ।)
भीम : यह जघन्य अपराध किसने किया ?
यक्ष : उन्होंने । बिना मेरे प्रश्नों के उत्तर दिए जल पीने का अपराध किया ।
भीम : जानते हो मैं कौन हूं ?
यक्ष : यही मेरा प्रश्न था ।
भीम : मैं पांडु–पुत्र भीम हूं ।
यक्ष : यह उत्तर नहीं परिचय का अंहकार है ।
भीम : तू कौन है ?
यक्ष : यह प्रश्नकर्त्ता पर निर्भर है ।
भीम : यह कैसा मायावी है !
यक्ष : देखते नहीं जो प्रत्यक्ष है ?
भीम : देखता हूं ।
यक्ष : देखना भविष्य में नहीं !
भीम : पहले मैं पानी पी लूं, फिर देखता हूं तुझे । नराधम ! हत्यारे ...
(पानी पीने चलता है ।)
यक्ष : सावधान ! बिना मेरे प्रश्न का उत्तर दिए यदि जल पिया तो मर जाओगे ।
भीम : क्या ?

यक्ष : इस जल का स्वामी मैं हूं । बिना मेरे प्रश्नों के उत्तर दिए, यह जल पीने का दुस्साहस मत कराना ।

भीम : कौन हो तुम ?

यक्ष : देखते नहीं ?

भीम : अभी देखता हूं ।

यक्ष : सुना नहीं, देखना भविष्य में नहीं होता ।

भीम : वाचाल ।

यक्ष : मैं भी प्यासा हूं । और इस जल का स्वामी हूं । फिर भी मैं तब तक यह जल पीकर अपनी प्यास नहीं बुझा सकता जब तक अपने प्रश्नों के उत्तर न पा जाऊं ।

भीम : मेरे पास इतना समय नहीं ।

यक्ष : समय क्या होता है ? उत्तर दो, क्या होता है समय ?

भीम : समय समय अर्थात् काल ।

यक्ष : काल प्रश्न करता है । और तुम लोग उसके प्रश्न का उत्तर नहीं देना चाहते ।

भीम : सारे उत्तर ग्रंथों में दिए जा चुके हैं । जाकर पड़ लो उन्हें ।

यक्ष : वे उत्तर अतीत के हैं । तुम्हारा उत्तर कहां है ?

भीम : मेरा उत्तर मेरी भुजाओं में है ।

यक्ष : क्रोध प्रतिक्रिया है । उत्तर नहीं ।

भीम : जानते नहीं मेरा नाम भीम है । मेरी गदा के प्रहार से पर्वत कांपते हैं । एक ही चोट से तुझे रसातल भेज सकता हूं ।

यक्ष : अपने आप से पराजित क्यों ?

भीम : हम वनवास में हैं ।

यक्ष : वनवास क्या है ? जंगलों में घूमना । केवल अपनी प्यास बुझाना ?

भीम : तू हमें उपदेश देगा ?

यक्ष : हर बात तुम्हें उपदेश लगती है, यह कैसा स्वभाव है !

भीम : देखता है मेरी भुजाएं !

यक्ष : तुम्हारा जलता मुंह देख रहा हूं । कितना अधीर, भूखा–प्यासा–निरीह ... ।

भीम : आह ! मैं और निरीह !

यक्ष : विवश ।

भीम : प्यास बुझा लूं फिर देखता हूं तुझे !

यक्ष : प्यास ही बुझाते रहे । धन और धन स्त्री, काम काम इच्छा और इच्छा ।

भीम : मूर्ख इच्छा की पूर्ति ही पुरूष का लक्षण है ।

यक्ष : पुरूष कौन है ?

भीम : मैं हूं पुरूष ।

यक्ष : इच्छाओं के गुलाम, तू पुरूष है । डरपोक स्वाभिमान हीन, चोर, लंपट, यही है तेरे पुरूष के लक्षण ?

भीम : मुझे नहीं जानता !

यक्ष : अपने आप को जानते हो ?

भीम : मेरा शत्रु ... ।

यक्ष : मैं के अलावा हर कोई शत्रु क्या ?

भीम : मैं मैं हूं ।

यक्ष : 'मैं' 'हम' क्यों नहीं ?

भीम : पहले जल पी लूं ।

यक्ष : यही कहकर सब गए जल पीने । किसी की प्यास नहीं बुझी । कोई नहीं आया लौटकर । ऐसा क्यों ? सबकी प्यास अपनी है । पर प्यास की भी तो अपनी प्यास है ।

(निरूत्तर भीम का जल पीकर अचेत होकर गिरना)

यक्ष : इन्हें पता है, इस तरह जल पीते ही मरना होगा, फिर भी ये क्यों पी लेते हैं ? क्या ये इतने अज्ञानी हैं ? ये दूसरों के अनुभव से लाभ क्यों नहीं उठाते ? ये सोचते– समझते क्यों नहीं ? इतनी साधारण बात क्यों नहीं समझते ? क्या ये समझना नहीं चाहते ? अपनी प्यास में इतने अंधे हैं कि देखकर भी नहीं देखते ? समय के प्रश्न, काल की चुनौती से संघर्ष शक्ति को जन्म देता है, क्या इन्हें इतना पता नहीं ? (सहसा) यह कौन है ? ओह, यही अर्जुन है। यह मेरे प्रश्नों का उत्तर अवश्य देगा।

(अर्जुन का आना ।)

अर्जुन : मेरे भाइयों को देखा है ?

यक्ष : उन्होंने नहीं देखा ।

अर्जुन : मेरे प्रश्नों का उत्तर दो ।

यक्ष : उन्होंने मेरे प्रश्नों का उत्तर नहीं दिया ।

अर्जुन : मर्यादा में रहो ।

यक्ष : क्या है मर्यादा ?

अर्जुन : मेरे भाई कहां हैं ?

यक्ष : देखो । वहां जाकर देखो । जाओ ।

(बढ़कर मरे हुए भाइयों को देखकर)

अर्जुन : यह क्या है ? यह क्या हुआ ?

यक्ष : उत्तर दो ।

अर्जुन : रूको । मैं पहले जल पी लूं ।

यक्ष : सबका स्वभाव वही है । सब वही भाषा बोलते हैं । सब सोचते हैं । देखते नहीं । सब मुझे अपना शत्रु समझते हैं । पर स्वयं को अपना मित्र भी नहीं मानते । सावधान कुंती नंदन, सावधान । पानी के निकट मत जाना । इस तरह जल नहीं पी सकते भारत ! यदि मेरे प्रश्न का उत्तर दे सको, तभी यह जल पीना ।

अर्जुन : क्या है तुम्हारा प्रश्न ?

यक्ष : जो तुम्हारा है ।

अर्जुन : मेरा क्या है ?

यक्ष : यही तो प्रश्न है ।

अर्जुन : निरर्थक बातों में फंसाने वाला ... हत्यारा प्रपंची ।

यक्ष : निरर्थक क्या है ? जो तुम्हारा स्वार्थ नहीं है। स्वार्थ क्या है ? तुम्हें प्यास लगी है। यही चिन्ता है । ये मरे हुए तुम्हारे भाई हैं, यही है दुख । पर ये मरे क्यों ? कारण मैं हूं क्या ? ओह, तुम्हें भी इतनी प्यास लगी है कि उत्तर देने की अपेक्षा नहीं । प्रश्न मेरे हैं, तभी तुम्हारे नहीं हैं ? मैं प्रश्नकर्त्ता हूं तभी मैं शत्रु हूं । पर ये प्रश्न मुझे मिले कहां से ?

अर्जुन : इसका उत्तर ढूंढना तुम्हारा कार्य है ।

यक्ष : मैं वही कर रहा हूं । मैं तुमसे, तुम्हारे सारे भाइयों से भी कहीं अधिक प्यासा हूं, तुम्हें इस प्यास की चिन्ता क्यों नहीं ?

अर्जुन : पहले अपनी प्यास बुझा लूं, तो उत्तर दूं ।

यक्ष : यही कहकर सबने जल पिया और मैं यहीं निरूत्तर खड़ा हूं । एक एक की मृत्यु मेरी प्यास को शत–शत गुना बढ़ाती चली गई ।

अर्जुन : पता है हम वनवास में हैं ?

यक्ष : क्यों ।

अर्जुन : हम धर्मयोद्धा हैं ।

यक्ष : धर्म पालन जंगल में होता है या प्रजा के बीच में जाकर उन्हीं के संग, वही होकर रहना होता है ? सबकी प्यास से अपनी प्यास जोड़कर जल का स्रोत ढूंढना होता है ।

अर्जुन : तुम्हारा प्रश्न क्या है ?

यक्ष : जो तुम्हारा है ।

अर्जुन : मेरा प्रश्न क्या है ।

यक्ष : बताओ । बोलो ।

अर्जुन : प्यास का समाधान यही जल है ।

यक्ष : सावधान, तत्काल मर जाओगे ।

अर्जुन : मैं मरने वाला नहीं, दूसरों को मारने वाला हूं ।

यक्ष : दूसरों की जानों से जुआ खेलने वाले जुआरी भी तुम्हारे लिए खिलौना है । धन और सत्ता के लालजी, कभी सोचा यह क्यों ?

अर्जुन : सोचना–विचारना तुम जैसे मूर्खों का काम है ।

यक्ष : और तुम्हारा ?

अर्जुन : दूसरों से काम लेना ।

यक्ष : दूसरे कौन हैं ?

अर्जुन : दूसरे लोग हैं । मैं उन्हें रास्ता दिखाता हूं । वे मेरी जय जयकार करते हैं ।
यक्ष : दूसरों को पथभ्रष्ट करना, आडम्बरपूर्ण भाषा, जीवन, यही उत्तर देते हो उन जय जयकारों का ?
अर्जुन : पानी पी लूं फिर बताता हूं ।
यक्ष : कितने–कितने वादे किए हैं लोगों से ? कोई वादा पूरा किया ?
अर्जुन : धीरज रखो ।
यक्ष : तब से यही कहते रहे हो – धीरज रखो । धीरज क्या है ?
अर्जुन : तेरा सिर नहीं उड़ाया, यही है मेरा धीरज ।
यक्ष : यह धीरज नहीं कायरता है । प्यासा धीरवान नहीं होता। देखो इन्हें। ये कौन हैं ? इन्हें क्यों मारा ? इनका दोष क्या था ? पीछा कर रहे थे, कुछ पूछना चाह रहे थे . . . । यह इतना बड़ा अपराध था । (मृतकों पर झुककर, छूकर देखता है)
यक्ष : तुम्हारे हाथों में जो अस्त्र–शस्त्र हैं, इन्हीं निर्जीव हाथों ने बनाए हैं । यही है जय जयकार करने वाले । यही रास्ता दिखाया है इन्हें ? देखो, यही है यक्ष प्रश्न . . . । (अर्जुन पानी पीने बढ़ता है ।)
यक्ष : सावधान, यहां जो केवल अपनी प्यास बुझाने आया, वह जल पीते ही मर गया । क्यों न उत्तर दो ।
यक्ष : सब चाहते हैं केवल प्यास बुझाना, उत्तर कोई और दे, ये मजे से पानी पिएं । ये चाहते हैं इनके भोग और भूख का उत्तरदायी कोई और हो ।
(बढ़ता है ।)
यक्ष : पर मेरी प्यास क्या है ? प्रश्न और उत्तर के लिए एक नहीं दो चाहिए । एक और एक मिलकर दो होते हैं । यहां एक और एक मिलकर शन्य हो जाता है या एक दूसरे को समाप्त कर वही एक बना रहना चाहता है । ऐसा क्यों ? क्यों ऐसा ?
(युधिष्ठिर का आना ।)
युधिष्ठिर : यहां इतना सन्नाटा । इतना रहस्यमय वातावरण । यह कौन बुन रहा है सन्नाटा ?
यक्ष : (स्वगत) क्या हम सब मिलकर नहीं बुन रहे ? यह जाल जो चारों ओर तना फैला है उसे क्या हमारी उंगलियों ने नहीं चुना ? इसे देखकर रहस्यमय क्यों बताते हो? जो जैसा जहां है, उसे उसी रूप में देखो, भ्रम मिट जाएगा । देखो । वहां देखो । यहां देखो, देखो ।
युधिष्ठिर : कहीं कुछ नहीं दीखता ।
यक्ष : तुम कुछ देखने आए हो । जो सोचते हो वही देखने । इसीलिए जो है, वह नहीं दिखाई पड़ता । देखना केवल देखना है। देखना कार्य है । तुम सोच रहे हो – देखो – देखो –
युधिष्ठिर : कौन ? कौन हो तुम ?
यक्ष : मुझे देख रहे हो ? या सोच रहे हो ?
युधिष्ठिर : देख रहा हूं ।
यक्ष : अब इधर देखो । देंखो । आगे बढ़ो ।
(वहां जाकर)
युधिष्ठिर : यह क्या? मेरे सभी भाई यहां इस तरह निर्जीव ! आह ! गदाधारी भीम, जिसने प्रतिज्ञा की थी, दुर्योधन की जांघें तोड़ डालूंगा । महाबली अर्जुन, कुरूकुल की कीर्ति बढ़ाने वाले ! साधारण मनुष्य की बातें और उनकी प्रतिज्ञाएं झूठी निकल जाती हैं, पर तुम लोगों के संबंध में जो दिव्य वाणियां हुई थीं, वे कैसे असत्य हो सकती हैं ? पुरूषसिंह बंधुओ, तुम लोग शास्त्रों के विद्धान, देशकाल को समझने वाले, तपस्वी और कर्मठ वीर थे अपने योग्य पराक्रम किए बिना कैसे प्राणहीन हो गए ?
यक्ष : केवल अपने भाइयों को देखा । इन्हें नहीं देखा ?
युधिष्ठिर : जल पीऊं ।
यक्ष : सावधान ! मेरे प्रश्नों के उत्तर दिए बिना यदि जल पिया तो तुम भी यमलोक के पांचवें अतिथि होगे ।
युधिष्ठिर : ओह ! तो ये लोग इस तरह मरे । मुझे पता था ये लोग प्रश्नों के उत्तर नहीं दे सकते । ये अपने–अपने अंहकार में डूबे थे । मैंने कहा था – ये अलग–अलग युद्ध कर मरेंगे ।
यक्ष : इन्होंने कोई युद्ध नहीं किए ।

युधिष्ठिर : ये कर नहीं सकते । मुझे पता था – ये इसी तरह मरेंगे ।
यक्ष : तो इनकी मृत्यु से तुम्हारे ज्ञान अंहकार को शांति मिल गई । जब यह मरे तो तुम्हें इनकी मृत्यु से चोट नहीं लगी । निर्मम, भविष्यवक्ता बना घूमता है । ये क्यों मरे, तुम्हें इसका दुख नहीं ?
युधिष्ठिर : कारण बाहर था । परिस्थितियां ऐसी थीं ··· ।
यक्ष : कारण ढूंढ लेना ही तो एकमात्र कार्य है तुम्हारा ।
युधिष्ठिर : कारण भीतर था । कारण बाहर ढूंढना मृत्युपथ पर जाना है । तुमने कभी इनसे संवाद नहीं किया । ये मुझसे संवाद नहीं कर सके । सब अपने–अपने अंहकार में बंधे सबसे संबंधहीन थे । तुमने राज्य दरबार में जुआ खेला । सब दांव पर हार गए । ये दर्शक बने देखते रहे । क्यों ?
युधिष्ठिर : ये सब मेरे साथ थे ।
यक्ष : पर जुए का पासा तुम्हारे हाथ में था । तुम हारे, ये सब क्यों हार गए ? तुम्हारी हार उसी क्षण हो गई जब तुम जुआरी के साथ जुआरी बने । तुम्हें अपने शत्रु का पता नहीं । ये तुम्हारी ललकार से जुए के युद्ध में शामिल हुए, पर वह जुआ सत्ता का था । जहां राजसिंहासन के अलावा और कुछ नहीं दिख रहा था ।
युधिष्ठिर : कौन हो तुम ?
यक्ष : समय ।
युधिष्ठिर : समय ?
यक्ष : जो अपने समय का स्वयं उत्तर नहीं देता, उसके लिए समय काल हो जाता है । और ये सब ही काल के मुख में गए हैं । तुम्हें पता था, ये इस तरह मरेंगे, पर महाज्ञानी, महाअनुभवी, भविष्यवक्ता, तुमने कभी इनसे बातें कीं ?
युधिष्ठिर : बातें करने का समय नहीं था ।
यक्ष : भाषण देने, उपदेश करने का अनंत समय था ।
युधिष्ठिर : सब मेरे प्राणप्रिय भाई थे ।
यक्ष : और ये भाई नहीं ।
युधिष्ठिर : आह ! प्यास लगी है । पहले जल पी लेने दो ।
यक्ष : सबकी अपनी–अपनी प्यास है ।
युधिष्ठिर : है ।
यक्ष : क्यों ?
युधिष्ठिर : वनवास में हैं ।
यक्ष : तुम भी उसी तरह प्यासे हो ?
युधिष्ठिर : तुम चाहते क्या हो ?
यक्ष : चाहता हूं एक साथी, जिससे प्रश्न कर सकूं ।
युधिष्ठिर : प्रस्तुत है ।
यक्ष : तो प्रश्न करूं ?
युधिष्ठिर : तुम प्रश्न करने के अधिकारी हो, मैं इसकी परीक्षा लूंगा ।
यक्ष : प्रस्तुत है ।

(विराम)

युधिष्ठिर : समय क्या है ?
यक्ष : समय बहता हुआ जल है ।
युधिष्ठिर : रहस्यमयी भाषा में उत्तर मत दो ।
यक्ष : समय प्रश्न है ।
युधिष्ठिर : प्रश्नकर्त्ता कौन है, क्या है ?
यक्ष : जो अपने से युद्धरत है ।
युधिष्ठिर : युद्ध क्या है ?
यक्ष : काल की चुनौती को स्वीकार करना ।
युधिष्ठिर : तुम प्रश्न कर सकते हो ।

(विराम)

यक्ष : यदि संकल्प है तो हर कोई उत्तर दे सकता है ।

युधिष्ठिर : तुम्हारा कार्य क्या है, यह नहीं जानता, तुम क्या चाहते हो, इसका भी पता नहीं । पर तुम्हारे विषय में मुझे कौतूहल हो गया है । तुमसे मुझे कुछ भय भी लगने लगा है ।

यक्ष : भयभीत उत्तर नहीं दे सकता, वह क्रोधित हो सकता है ।

युधिष्ठिर : क्रोध नहीं करूंगा ।

यक्ष : अभय हो ।

(विराम)

यक्ष : आशीर्वाद क्या है ?

युधिष्ठिर : सबका कल्याण ।

यक्ष : सब क्या है ?

युधिष्ठिर : सब में ही हूं । मैं ही सब हूं ।

यक्ष : शक्ति क्या है ?

युधिष्ठिर : काल चुनौती से संघर्ष ।

यक्ष : पृथ्वी से भी भारी क्या है ? आकाश से ऊंचा क्या है ? वायु से भी तेज चलने वाला क्या है ?

युधिष्ठिर : मां का गौरव पृथ्वी से भी अधिक भारी है । पिता आकाश से भी ऊंचा है । मन वायु से भी तेज चलने वाला है ।

(विराम)

यक्ष : धर्म क्या है ?

युधिष्ठिर : सत्य को धारण करने वाला ।

यक्ष : सत्य क्या है ?

युधिष्ठिर : अपना निजी भोग ।

यक्ष : भोग कौन करता है ?

युधिष्ठिर : कर्त्ता ।

यक्ष : कर्त्ता कौन है ?

युधिष्ठिर : व्यक्ति ।

यक्ष : व्यक्ति क्या है ?

युधिष्ठिर : कर्म ।

यक्ष : कर्म का मूल क्या है ?

युधिष्ठिर : देखना ।

(विराम)

यक्ष : ये मरे क्यों ?

युधिष्ठिर : अपनी मृत्यु से ।

यक्ष : मृत्यु क्या है ?

युधिष्ठिर : उत्तर न दे पाना ।

यक्ष : उत्तर क्या है ?

युधिष्ठिर : प्रश्न करना ।

यक्ष : प्रश्न कौन करता है ?

युधिष्ठिर : जो देखता है ।

यक्ष : देखना क्या है ?

युधिष्ठिर : संबंधित होना ।

यक्ष : किससे ?

युधिष्ठिर : संपूर्ण से ।

(विराम)

यक्ष : एक की मृत्यु से दूसरा अनुभव क्यों नहीं करता ?

युधिष्ठिर : एक दूसरा नहीं है ।

यक्ष : एक और एक, दो क्यों नहीं होते ?

युधिष्ठिर : एक का अंहकार दूसरे को काट देता है ।

यक्ष : चलता कौन है ?

युधिष्ठिर : काल के ऊपर पैर रखने वाला ।

यक्ष : समाधान क्या है ?

युधिष्ठिर : समय को उत्तर देना ।
यक्ष : उत्तर क्या है ?
युधिष्ठिर : काल प्रश्न से जूझना ।
(विराम)
यक्ष : वनवास क्या है ?
युधिष्ठिर : सबके बीच में होना ।
यक्ष : कार्य क्या है ?
युधिष्ठिर : सजग–सचेत हो जाना ।
यक्ष : आश्चर्य क्या है ?
युधिष्ठिर : देखना, पर देखकर अनुभव न कर पाना ।
यक्ष : अनुभव का प्रमाण क्या है ?
युधिष्ठिर : भीतर से बाहर होना ।
यक्ष : आस्था क्या है ?
युधिष्ठिर : जो है, उसे स्वीकार कर लेना ।
यक्ष : अपना क्या है ?
युधिष्ठिर : जो सामने है, वही ।
यक्ष : सुख क्या है ?
युधिष्ठिर : चैतन्य रहना ।
यक्ष : दुख क्या है ?
युधिष्ठिर : संवादहीन होना ।
यक्ष : संवाद क्या है ?
युधिष्ठिर : समान होना ।
यक्ष : भयभीत कौन है ? मुक्त कौन है ?
युधिष्ठिर : जो सुरक्षित होना चाहता है – घर में, पद में, सत्ता में, विचार और विश्वास में, जगत और ईश्वर के साथ अपने संबंधों में, वही है भयभीत । जो इन सारी सुरक्षाओं से मुक्त है, सहज है, जागरूक, वही है भय से मुक्त । जो सबको उपलब्ध है, वही है मुक्त ।
यक्ष : तुमने मेरे प्रश्नों के उत्तर दिए । अब अपने भाइयों में जिस एक को चाहो, वह जीवित हो सकता है ।
युधिष्ठिर : चाहता हूं, सहदेव जीवित हो जाए ।
यक्ष : आश्चर्य है, तुम्हारा सबसे प्रिय भीमसेन, महापराक्रमी अर्जुन, इन्हें छोड़कर तुम अपने सौतेले भाई सहदेव को जिन्दा देखना चाहते हो, क्यों ?
युधिष्ठिर : यही सबसे छोटा है ।
यक्ष : (चुप देखता है)
युधिष्ठिर : यह दूसरी मां का है ।
यक्ष : (देख रहा है)
युधिष्ठिर : यही सबसे नीचे है ।
यक्ष : (हाथ उठाकर) जो सबसे छोटा है, जो सबसे नीचे है वह जीवित हो जाए ।
(दो बार कहता है । पहली बार में सहदेव जीवित उठता है । दूसरी बार में वे मरे हुए लोग जीवित हो उठते हैं ।)
यक्ष : तुम्हारे स्पर्श से ये जीवित हो सकते हैं ।
(सहदेव के स्पर्श से तीनों पांडव जीवित हो उठते हैं । लोगों से पहली बार इन पांचों की नजर मिलती है ।)
(वृंद गायन)
मेरी प्यास इच्छा थी
धर्म सामने खड़ा था ।
मेरी प्यास जल थी
प्रश्न जल से बड़ा था ।
(यक्ष अदृश्य हो जाता है । इस जीवित जगी जनशक्ति से भयभीत वे फिर भागते हैं ।)
(संगीत)

चौथा अंक

(लोग उन्हें पकड़ने–घेरने के क्रम में मंच पर आए हैं ।)

बलराम : देखते हैं, भागकर कहां जाते हैं । नकुल सेन ! वह एक जगह से दूसरी जगह भागता रहा । क्लर्क से पी0आर0ओ0 । पी0आर0ओ0 से मैंनेजर ... मैंनेजर से जनरल मैंनेजर ।

शशी : एक यूनियन से दूसरी यूनियन को तोड़ना। तोड़–फोड़ करना । हड़तालें करवाना। मालिकों से मिलकर मजदूरों का शोषण करना–यही रहा है चरित्र नकुल सेन का।

हरीराम : नकुल सेन बेइमानी–भ्रष्टाचार का एक जीता जागता नमूना है । वह एक ऐसा जहरीला कीड़ा है जो समाज को अन्दर ही अन्दर से खोखला करता गया ।

पहला छात्र : इस कीड़े को पाला अर्जुन देव ने ।

बलराम : अर्जुन देव की कथनी–करनी में इतना भारी अन्तर रहा कि देखने वाला शर्म से अपना माथा झुका लेता ।

शशी : अर्जुन देव ने गुंडों को पाला। कुछ भी कर गुजरने में उसे कोई लाज–शर्म नहीं । यह इन्सान को इन्सान नहीं वोटर समझता है ।

विजय : सब कुछ इन नेताओं के लिए बिकाऊ माल है ।

पहला छात्र : और वह सहदेव शर्मा ! उसने हमारी नाक काट डाली । ऐसा बेशर्म । चरित्रहीन !

विजय : शायद इन्हें यह नहीं मालूम की जनता सब देख रही है ।

बलराम : जमाना बदल चुका है । लोग अब कथनी नहीं सिर्फ करनी देखते हैं ।

(इला दौड़ी आती है)

इला : सुनो ... सुनो ! भीम वर्मा पकड़ा गया ।

(सब क्या ? ... अच्छा ... क्या कहा ? अच्छा आदि कहकर अपनी–अपनी प्रतिक्रिया प्रकट करते हैं ।)

इला : भीम वर्मा हवाई जहाज से विदेश भाग रहा था । एरोड्रोम पर पकड़ा गया ।

विजय : हअं ! पकड़ा गया तो छूट भी जाएगा। अखिर काला धन किस काम के लिए है । लोकतंत्र इन पूंजीपतियों की जेब में है ।

हरीराम : भीम वर्मा ने कला संस्थाएं खोल रखी हैं, जहां शर्मनाक व्यापार चलते हैं – अफसरों को पटाने के लिए ।

(दूसरे छात्र का प्रवेश)

दूसरा छात्र : अरे सहदेव ... ।

बलराम : क्या हुआ सहदेव को ?

दूसरा छात्र : आत्महत्या करने की कोशिश में रंगे हाथों पकड़ा गया !

बलराम : मर कर भागना चाहता था !

पहला छात्र : आओ ... चलाओ गोली !

बलराम : अब भागकर कहीं नहीं जा सकते !

दूसरा छात्र : सहदेव शर्मा ! यूनिवर्सिटी यूनियन का अध्यक्ष । घटिया राजनीतिक दल और काले धन का सहारा लेकर यूनियन का चुनाव तो जीत गया।लेकिन उसने विश्वविद्यालय के माहौल में जहर भर दिया !

हरीराम : और वह जहर आज नासूर बनकर फूट रहा है ।

(पिता आता है ।)

पिता : किसीने मेरे बेटे सहदेव को देखा है । बताओ, कहां है मेरा बेटा ? बोलो ··· ।

पहला छात्र : आज ढूंढने चले हैं, जब वह उन्हीं बदमाशों और हत्यारों के बीच गायब हो गया ।

दूसरा छात्र : अब तक कहां थे ?

पिता : क्या कहा ?

चपरासी : जहां ऐसा घटिया माहौल हो, बेमतलब की पढ़ाई, ऐसी गहरी निराशा – जहां कहीं भी कोई आदर्श न दिखाई दे – वहां सहदेव शर्मा इसी तरह गायब होगा ।

पिता : क्या कहा ? जरा फिर से तो कहना । सहदेव शर्मा को कोई आदर्श न मिला । आदर्श जैसे कोई हलुवा–पूड़ी है जो मुंह में गप्प से डाल ले ! क्या है आदर्श ? जो जी में आए वही करो । क्या है आदर्श, कभी उसने प्रश्न किया ? कभी उसने उत्तर दिया कि वह कहां जाता है ? कहां रहता है ? क्या करता है ? ··· आदर्श चारों तरफ है क्योंकि चारों ओर निर्मम सच्चाइयां हैं । पर जब पात्र ही न हो, पात्र हो भी, पर पात्र में सूराख हो तो क्या उसमें कुछ रूकेगा । नहीं, मेरे पुत्र के पात्र में, चरित्र में कितने छेद हैं ··· कितने सूराख ! तोड़ दो इन टूटे हुए पात्रों को । नष्ट हो जाएं ऐसे कुपात्र !

(कुमार दौड़ा हुआ आता है ।)

कुमार : जनता ने अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव को घेर लिया है । देखो ··· देखो ।

(सब आते हैं। एक ओर उत्तेजित जनसूमह, दूसरी ओर वहीं चारों व्यक्ति । बीच में सत्यप्रिय । भीड़ को चीरकर पिता सामने है ।)

पिता : आठ साल का था जब तेरी मां का स्वर्गवास हुआ। कुल पौने तीन सौ की नौकरी। अपना पेट काट–काट कर तुझे पढ़ाया । हायर सेकेण्डरी में फस्ट क्लास, कर्ज लेकर यूनिवर्सिटी में तेरा दाखिला कराया । वहां जाते ही क्या हो गया तुझे ? किसने बहकाया । बता कौन है वह ? किसने विषमंत्र दिया कि पढ़–लिखकर क्या होगा । राजनीति कर सब जै जैकार करेंगे । मेरा अपमान, गुरू अपमान, आत्म अपमान । मेरा हमारा, समाज का जीवन दोनों एक हैं – शिक्षा से यह आत्मबोध नहीं मिल रहा था तो इसके माने यह नहीं कि भ्रष्ट राजनीति के अंधे जंगल में चले जाओ । यह आत्महत्या जघन्य अपराध ··· कौन है वह ?

सहदेव : वह मैं स्वयं हूं पिता जी, स्वीकार करता हूं । दोष उसका नहीं जो चौराहे पर मुझे अचानक मिला और मुझे एक ऐसे अज्ञात, दिशाहीन पथ पर ले जाकर छोड़ दिया जहां से लौटना संभव नहीं था । हाथ उठाकर कहता हूं उद्योग संस्थान, शिक्षण संस्थाएं यदि अपने काम करती रहें तो विद्यार्थी नेताओं और उनके नेताओं को अपने स्वार्थ के लाभ के लिए फौज कहां से मिलेगी ? युवा छात्र शक्ति, सर्वहारा मजदूर–किसान के नाम पर एक वर्ग खड़ा हो गया है । इस वर्ग का जन्मदाता आधुनिक पूंजीवाद, समाजवादी राजनीति और समाजवाद है । जो मेरे जीवन में मिला ।

शशी : नाम लो उस अपराधी का । कहां है वह जिसने हमारे जीवन में आग लगाई ।

श्रीमती : तुम कौन हो ? यह प्रश्न करने वाली ? अपने अलावा कभी दूसरे के दुख–दर्द से तुम्हारा कोई नाता रहा ? केवल अपनी सुख–सुविधा के चक्कर में रहने वाली, तुझे पता है क्या है पत्नी, क्या है मां, क्या है दूसरा ? जो बिना मूल्य चुकाए हड़पने के चक्कर में है ··· । क्या है तुम्हारी पहचान ? विवाह करने आई थी या उसकी सत्ता की लालच में अपने आपको बेचने ? विवाह के नाम पर बिक नहीं पाई । यही है तुम्हारा विद्रोह ?

शशी : मेरे पास और कोई विकल्प नहीं था ।

श्रीमती : जीवन विकल्प कोई लाकर तुम्हारे हाथों में सोंप दे, तभी उस राजदरबार के स्वयंवर में गई थी एक पति के बहाने अनेक पति ··· । (उनसे) आज कैसे दिख रहे हो ? इतने चुप क्यों ?

वर्मा : मैं इस तरह यहां आया हूं, विश्वास नहीं होता ।

सेन : यह सत्य मेरे दिमाग में घुस नहीं पा रहा ।

देव : अभी मेरी चेतना पूरी तरह वापस नहीं लौट पाई है । क्या इन्हीं वस्त्रों में यक्ष से वह सामना हुआ था ? ये सब हमें इस तरह क्यों देख रहे हैं ? हम पीछे भागकर मरे थे । फिर

कैसे जीवित खड़े हैं वर्तमान में ? विश्वास नहीं हो पा रहा कि अतीत की वे सारी घटनाएं हमारे पीछे छूट गईं ।

वर्मा : मेरे लिए कमाई यही रह गई थी कि मैं दूसरों की कमाई का शोषण करूं । नीचे से ऊपर चढ़ते–चढ़ते जहां पहुंचा था, वहां इतनी कम जगह थी कि दूसरों को नीचे गिराकर ही मैं वहां खड़ा रह सकता था । उतने ऊपर से नीचे लोगों को देखना संभव नहीं था ।

सत्यप्रिय : केवल शब्द, कोई ईमानदारी नहीं ।

सेन : सच्चाई की जिन्दगी से कोई रिश्ता नहीं ।

सहदेव : सच्चाई की जिन्दगी जीते होते तो हमें भागना न पड़ता ।

देव : अगर मैं ईमानदारी, सच्चाई की जिन्दगी जीता तो अपने गांव में किसान होता । नेता का जीवन केवल मेरा पेशा है, धंधा है । इसमें मैं नैतिकता कहां से, कैसे जोड़ता ।

बलराम : सद्भावना से खिले हुए मुक्त चेहरों को देखने के लिए आंखें खोलो । देखो इन असंख्य भूखे–निराश उत्पीड़ित चेहरों को । हमें अपने आप से बांटकर यदि फिर देखा तो पानी में आग लगेगी । फिर इस आग को बुझाना संभव न होगा । तब यही होगा केवल यही फल, कि बार–बार मूल्यहीन आंदोलन । विद्रोह के द्वारा नये शासन का फिजूल प्रयोग करने से बेहतर है कि हम सब अपने आपको किसी जालिम तानाशाह के हाथों समर्पित कर दें और अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो जाएं।

हरीराम : सैंकड़ों वर्षों से यही होते–होते हब सब ऊब चुके हैं, परिवर्तन केवल राज्य स्तर पर होकर रह जाता है, समाज वहीं का वहीं जड़वत छुटा, जमा रह जाता है । क्या हम स्वयं अपना आदर्श, समाज के सामने नहीं प्रस्तुत कर सकते ? हम कब तक उनके मुंह देखते रहेंगे, जिनके चेहरे की पहचान गायब हो चुकी है ।

विजय : इन सबके साथ समरसता की जिन्दगी जीने का उदाहरण कौन देगा ? सब फंसे हैं, सबसे ज्यादा वे, जिन्होंने जलप्रवाह को कितने ही बांधों से रोक दिया है । और इनकी प्यास में अब केवल आग लगने की देर है । वह आग कोई देशद्रोही विश्वासघाती भी लगा सकता है इतने लम्बे समय तक जल प्रवाह को रोके हुए बांध टूटे रहे हैं । स्थिर जल का महासागर के साथ फिर से संपर्क हो रहा है । ज्वार–भाटा उठ रहा है । एक ओर अथाह जल दूसरी ओर भंयकर प्यास ।

पहला छात्र : जवाब दो किसने तोड़ा है उस सेंतु को जिसके कारण भोग भिक्षुकता हो गया और त्याग दारिद्र ?

विजय : इस तरह चुप क्यों हैं ?

कुमार : कुछ बोलते क्यों नहीं ?

हरीराम : सत्यप्रिय !

देव : यह क्या बोलेगा ! यह हर बात को रहस्यमय बना देता है !

वर्मा : यही इसका चरित्र है ।

सहदेव : तुम सबका चरित्र क्या है ? कृतध्न, विश्वासघाती ... !

कुमार : और तेरा चरित्र ?

विजय : तूने नई पीढ़ी के माथे पर कलंक लगाया ।

सहदेव : हां, मैं स्वीकार करता हूं । मुझे इनके उन तरीकों का पता नहीं था जिसके द्वारा ये निर्दोष, मासूम युवकों को बहकाते हैं।उन्हें विनाशकारी काम करने के लिए भड़काते हैं और उनमें घृणा कर जहर भरते हैं ।

बलराम : हम इन्हें जिन्दा नहीं रहने देंगे ।

सत्यप्रिय : रूको ! क्या तुम लोग जिन्दो हो ? बालूरेत की तरह बिखरे और फैले हुए । हवा में उड़ने वाले ! सूराखों में गिरने वाले ... चंद टुकड़ों और स्वार्थों में बिकनेवाले । जो जैसा चाहे वैसा तुम्हें इस्तेमाल कर ले आप ... यही है तुम्हारे जीवित रहने का प्रमाण ? अपने–अपने स्वार्थों और अंहकारों में बंटे हुए लोग ... स्वार्थ और अंहकार में जरा–सी चोट लगी तो क्रांतिकारी हो गए । अपने आपको कभी देखा है ? कभी अपने आपको जानने की कोशिश की ? जो तुम्हें प्रिय है, वही हैं ये । एक ओर जिंदाबाद, दूसरी ओर मुर्दाबाद –– क्या होता है इसका अर्थ ?

चपरासी : देखने और जानने का काम आपका था । हम तो दिन–रात पेट की आग बुझाने में लगे हैं ।

बलराम : हमें कोई न मिला – न पिता न गुरू ।

कुमार : हमें ये मिले !

सत्यप्रिय : और इन्हें तुम मिले ... ! इसलिए एक दूसरे को मार देने के अलावा और कोई चारा नहीं है, क्यों ?

शशी : क्यों ?

सब : क्यों ?

देव : अपने आपको हमसे अलग, हमसे दूर क्यों रखे रहे ?

वर्मा : हम गिर जाएं तुम हमसे ऊंचे–श्रेष्ठ बने रहो – इसीलिए ?

सेन : चरित्रवान बने रहने का आडम्बर !

देव : कभी हमारे बीच नहीं आए – बदनामी के डर से ... ।

सेन : तुम अपने आपको धर्म और जीवन मूल्यों के ऊंचे सिद्धांतों में बंदी रखकर हमसे अलग क्यों थे ? हअं, एकात्म की बात करते रहे । जो मैंने किया ... जो मैं कर रहा हूं .... क्या तुम नहीं कर रहे ? एक ही शरीर में एक हाथ क्या दूसरे हाथ से अलग है ? अगर सब एक है तो सबसे अलग कैसे हो तुम ? हमसे अलग रहने का लक्ष्य तुम्हारा विशेष बना रहना नहीं था ? सत्यप्रिय नाम है ! पर क्या कभी सत्यप्रिय था ? सत्यप्रिय है ?

वर्मा : कहीं कीचड़ और गंदगी न लग जाए इसके दामन में ...)

सेन : सच्चाइयों से दूर, अलग ऊंचे और ऊंचे रहकर –– ताकि हम सब इन्हें नीचे और छोटे दिखाई पड़ें ।

सहदेव : क्यों ?

बलराम : क्यों ?

सब : क्यों ?

सत्यप्रिय : आह ! यह कैसा प्रश्न है । मैं पीछे भागकर युधिष्ठिर हो सकता हूं । अतीत के उस यक्ष प्रश्न का उत्तर भी दे सकता हूं ... पर ये प्रश्न ... । जितना मेरा पुण्य था, जितना मेरा अनुभव था, उत्तर दे दिया । क्या ... ? वह पुण्य, वह अनुभव, वह प्रश्न, वह उत्तर अतीत का था ... जिसका इस वर्तमान से कोई संबंध नहीं ? ओह! इसका उत्तर नहीं दे सकता । क्यों मैं पीछे मुड़कर देख रहा था – वही महान ... वही श्रेष्ठ ... वही बीता हुआ ... । ओर ! सत्य वह नहीं है जो बीत चुका है ? वह यहां है – यहीं और अभी । सुनो ! सुनो ! मैंने एक बार उत्तर देकर जिला दिया । यह जीवन तुम्हारा नहीं, दान है किसी और का ! अब स्वयं उत्तर देकर दानमुक्त हो ! और जीवन जीने का अधिकार प्राप्त करो ।

(सब चुप देखते रह जाते हैं ।)

सहदेव : शमशान जैसी यह चुप्पी ... यह खामोशी अब और बर्दाश्त नहीं की जा सकती ! यह खिंचा–तना हुआ सन्नाटा गुलामी है । हमारी आजादी घृणा की देन थी तभी मिली हमें यह गुलामी । देखो असंख्य यक्ष हमें घूर रहे हैं । देखो ... देखो ... देखो !

(पहले उस जनसमूह को ... फिर वह जनसमूह उन चारों को । फिर सब एकाकार हो दर्शक समाज के प्रति ।)

पिता : क्या देखा ? क्या देख रहा है ?

बच्चा : देखा पिताजी, जो भागता है, वह मारा जाता है ।

पिता : और क्या देखा ?

बच्चा : उत्तर देना होगा ।

पिता : तू भविष्य है, तू समझ गया । लेकिन प्रश्न है ।

बच्चा : क्या प्रश्न है पिताजी ?

पिता : क्या इस सत्य को वर्तमान भी समझ रहा है ।

बच्चा : बोलो, उत्तर दो ।

(बच्चा सहदेव के सामने खड़ा होकर उससे और अन्य तीनों से पूछता है ।)

बच्चा : बोलो उत्तर दो ।

(सहदेव शर्मा, नकुल सेन, भीम वर्मा । अर्जुन देव उस बच्चे को फिर जनसमूह को देखते हैं ।)

सहदेव : उत्तर दो ! श्मशान जैसी यह चुप्पी, यह खामोशी ।

(वृंद गान)

उत्तर सूर्य जल के मौन में डूबा
प्रश्न की ऊष्मा घिरा हुआ काल है
एक ओर प्यास दूसरी ओर अथाह जल

प्यास ऐसी जल से बुझती कहां
ये खड़े हैं चंहुदिस असंख्य यक्ष
काल का प्रश्न सूर्य भरा थाल है
उत्तर सूर्य जल के मौन में डूबा
प्रश्न की ऊष्मा घिरा हुआ काल है ।
(पर्दा)